

आर्थिकायाकृत, अनुभाव की



रचनाकार-
मोनिका त्यागी



अभिव्यक्ति अनुभव की



02

अभिव्यक्ति अनुभव की

(रचनाकार-मोनिका त्यागी राणा)





अभिव्यक्ति अनुभव की



03

प्रकाशक
कवि एवं लेखिका
मोनिका त्यागी राणा
फ्लैट नं. 201-284, गुरमुख भवन, लखनऊ, उ.प्र.

प्रकाशन-

सम्पदा न्यूज

© श्री मोती लाल वेल्फेर सेवा ट्रस्ट
बरहज, देवरिया, उ.प्र.

प्रथम संस्करण



Email-

anjanikumarupadhyaya@gmail.com
editorsampadanews@gmail.com

Website-

www.sampadanews24.blogspot.com





समर्पण



जिनसे जीवन में ज्योति मिली,
शक्ति मिली, आत्मविश्वास मिला,
पूज्य पिता श्री रघुवीर सिंह त्यागी,
पूजनीया माता श्रीमती सरोज बाला त्यागी
एवं जीवन साथी श्री सुधीर राणा
के चरणों में मेरी प्रथम कृति
समर्पित ।
-मोनिका त्यागी राणा



अभिव्यक्ति अनुभव की



05



नाम - मोनिका त्यागी राणा

जन्म - 13 अक्टूबर 1977

जन्म स्थान - शारदा नगर, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश।

शिक्षा - जेवी जैन डिग्री कॉलेज सहारनपुर।

योग्यता - अंग्रेजी एवम् दर्शनशास्त्र से परास्नातक।

पिता का नाम - श्री रघुवीर सिंह त्यागी

माता का नाम - श्रीमती सरोज बाला त्यागी।

कार्य- विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लिखने का शौक, कविता गीत की रचना, धर्म स्थल, ऐतिहासिक स्थल, पौराणिक स्थल पर खोज परक कार्य करने का शौक और उनको संकलन के रूप में दैनंदिनी में संकलित करने का कार्य। स्वतंत्र रूप से शिक्षण कार्य करने का शौक। कई विद्यालयों में बच्चों को शिक्षा और संस्कार देने का कार्य। 17 जून 2005 को वैवाहिक जीवन श्री सुधीर राणा के साथ। तमाम पत्र-पत्रिकाओं में सम्मान जनक लेख के लिए सम्मानित। पुस्तक संकलन के रूप में पहली कृति, 'अभिव्यक्ति अनुभव की'

राष्ट्रीय स्तर की पत्रिका सम्पदा न्यूज़ में बाबा नागार्जुन, बेकल उत्साही, क्षेम चन्द्र सुमन, डाक्टर शंभू नाथ सिंह, मोती बीए,





त्रिलोचन शास्त्री जैसे महान व्यक्तित्वों के संरक्षण में उनकी पत्रिका, 'सम्पदा न्यूज़' में लेखन का कार्य और उनकी पत्रिका में संपादन का कार्य। वर्तमान में सम्पदा न्यूज़ के संपादक के रूप में कार्यरत।

श्री मोतीलाल वेलफेयर सेवा ट्रस्ट द्वारा संचालित 'रेडियो मोती' में हिंदी विभाग के प्रोड्यूशर के रूप में कार्यरत।

संपर्क सूत्र -

संपादक संपदा न्यूज़

www.sampadanews24.blogspot.com

email-editorsampadanews@gmail.com





संघर्षों की परिणति ‘अभिव्यक्ति अनुभव की’

मेरा जन्म सहारनपुर के शारदा नगर में हुआ था। बहुत ही साधारण परिवार में। हम बड़े और हमारे दो छोटे भाई। घर में हमेशा प्यार भरा माहौल मिला। पिता एक सरकारी नौकरी में थे और अपनी मेहनत और लगन से उन्होंने एक घर और एक दूकान बना ली थी। माता जी हमारी पूर्ण रूप से सात्त्विक, सत्य की प्रतिमूर्ति, प्रेम की अथाह सागर के साथ एक साधारण गृहणी थी। अध्ययन की ललक हमें बचपन से ही थी। घर से बाहर हमेशा अपने परिवार के साथ ही जाते थे। बचपन से ही पूजा-पाठ का पैतृक गुण मिला था। माताजी जब भी पूजा करने बैठती उनके साथ हम भी बैठते और व्रत भी रखते थे। 11 वीं कक्षा में आने के बाद ही मेरी शादी तय कर दी गई। मेरा मन नहीं था, शादी का। हम पढ़ना चाहते थे, लेकिन घरवालों की खुशी के लिए मैंने हों कर दी। सब बड़ों से बस एक प्रार्थना की कि मेरी पढ़ाई पूरी करने दी जाए।

पढ़ाई पूरी होने पर जब शादी के बात आगे बढ़ी तो पता चला कि आधुनिक परिवेश के प्रभाव में अपने को वो व्यक्ति कही वैवाहिक जीवन में व्यवस्थित कर चुका है। हमे कोई आश्चर्य नहीं हुआ क्योंकि उम्र दोष कही कही अति प्रभावी हो जाते हैं। दोष बच्चियों के किस्मत का अधिक दिया जाता है इसलिये बहुत अधिक बाते सुनने को मिली। मैंने सब का सामना किया। उसके बाद मैंने पुनः पढ़ाई पर भी ध्यान दिया। साथ ही दैनंदिनी में अभिव्यक्ति का सिलसिला शुरू हो गया। अक्सर मुक्तक और छोटी छोटी कविताएं लिखते थे और कभी कभी शायरी भी करते थे।

इस समय मेरे लोगों को जानने और पहचानने का अच्छा अनुभव मिला। साथ ही साथ व्यक्तिगत विद्यालय में अध्यापिका की अवैतनिक नौकरी शुरू कर दी थी। मैंने चार साल अध्यापिका के रूप में कार्य किया। उसके बाद पुनः फिर से शादी के प्रस्ताव आने लगे। माता-पिता भी परेशान थे मेरे भविष्य को लेकर। भाग्य ने मेरा विवाह एक राजपूत घराने में करवा दिया। मेरी शादी की कोई इच्छा नहीं थी। मेरी इच्छा तो सारी उम्र अपने माता पिता के साथ रहने की थी, पर यह कहाँ सम्भव होता है, बेटी पराई धन मानी जाती है, इसलिए नियति



के निर्णय के अनुसार मुझे ससुराल जाना पड़ा, 17 जून 2005 को। पहली बार मां-बाप से 600 किलोमीटर दूर सहारनपुर से लखनऊ आ गए। अकेलापन महसूस होता था, कोई अपना पास नहीं। शादी के बाद समझ ही नहीं आ रहा था कि क्या करें। पति का प्यार था। एक और सहारा साथ था ही किताबें। तरह तरह की किताबें पढ़ना शुरू कर दिया। उसके बाद 18 मई 2006 में हमारे बड़े बेटी का जन्म हुआ। उसके आने के बाद समय कैसे निकल रहा था पता ही नहीं चला। उसकी देखभाल में खो गए। मन में कुछ करने की इच्छा खत्म नहीं हुई थी। ऐसे ही समय बीतता गया। 2011 में हमारी दूसरी बेटी का जन्म हुआ। समय निकालता गया। दोनों की देखभाल में पता ही नहीं चला।

समय के झंझावात ने कई प्रकार के डरावने सपने दिखाए। भविष्य को लेकर डर लगा। फिर से नौकरी खोजने लगे, पर बहुत धक्के खाने के बाद भी नौकरी नहीं मिली। घर पर ट्यूशन भी पढ़ाने का कार्य किया। रिश्तों में मधुरता को ढालने का प्रयास हमेशा से जारी था। बच्चों के भविष्य का भी सवाल सामने था। फिर अचानक एक ऐसे समय आया जब जीवन में बसन्त आया। हम हमेशा अपने विचारों को रचना के रूप में सोशल मीडिया पर व्यक्त करते थे इसी में मेरा परिचय अंजनी उपाध्याय भैया से हुआ और उन्होंने हमें मौका दिया अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का। धीरे-धीरे हमारे अंदर हमारे लिखने का जज्बा और मजबूत होता गया। समपदा न्यूज मेरा आधार बना, अपनी प्रतिभा को सामने लाने का।

घरेलू समस्याएं भी सुधरने लगी। कहा गया है कि अगर आप अपनों के सामने किसी लायक नहीं है, या आपकी और आपके जीवन की कोई कीमत नहीं और जब लोग आपको जानने लगते हैं तो आपकी अपनी एक जगह बन जाती है। सब कुछ अच्छा होने लगता है। उसके बाद मन में विचार आया कि क्यों ना अपने आने वाली पीढ़ी को इसका एहसास कराया जाए कि हमारे जीवन में हमारे धर्म का क्या महत्व है? फिर हमने हिंदू धर्म पर कुछ लेख लिखें। उसके बाद कुछ ऐसे प्राचीन मंदिरों पर कुछ लेख लिखे जो आम लोगों के लिए दुर्लभ हैं। उसके बाद कुछ ऐसे प्राचीन मंदिर हैं जो आम जन मानस की स्मृति पटल से दूर हैं, हमे लगा कि उनके बारे में सबको मालूम होना चाहिए। बस फिर क्या था हमने उनके दर्शन किए उनके बारे में जाना। उनके इतिहास को समझा। फिर उनके बारे में और लिखा।



अभिव्यक्ति अनुभव की



09

सम्पदा न्यूज में सम्मानित स्थान मिला। परिवार और समाज में भी हमे नाम और सम्मान मिला जिसमे आपका आशीर्वाद ने एक साकार रूप प्राप्त किया जिसका परिणाम है, 'अभिव्यक्ति अनुभव की' ये मेरी प्रथम रचना नहीं, बल्कि आपका आशीर्वाद है।

मोनिका त्यागी राणा,
लखनऊ





प्रथम पुष्प

पुरुषों के मानसिक डिप्रेशन का एक कारण क्या प्रभावशाली औरतों की प्रताङ्गना है...।

नारी हित में विशेष कानून, तो पुरुष हित में क्यों नहीं
औरतों की प्रताङ्गना पैदा करती है भयानक रोग ‘मानसिक डिप्रेशन’

“ शासन इस तथ्य पर विशेष ध्यान दे और यह मनन करे कि जैसे सभी पुरुष एक समान नहीं होते वैसे सभी स्त्रियाँ भी समान नहीं होती। हर जगह रावण नहीं होता तो हर जगह सीता भी नहीं होती है।”

मोनिका त्यागी राणा, लखनऊ,

समाज में अत्याचार और जुल्म के खिलाफ आवाज ठाने का अदम्य साहस का एक नाम, जो सनातन संगठन की प्रभारी होने के साथ चेतना फाउण्डेशन की उपाध्यक्ष भी हैं। अंग्रेजी और दर्शन में परास्नातक की योग्यता के साथ सनातन शिरोमणि सम्मान से सम्मानित हैं। कई वर्षों तक आदर्श शिक्षिका के रूप में कार्य भी किया है। चार दशक के अन्तराल में दिल्ली से लेकर लखनऊ तक इन्होंने जन जागरण का भी काम किया है। समाज ने एक आम धारणा बनाली है कि अत्याचार केवल पुरुष वर्गही स्त्रियों पर करता है। एक स्त्री पुरुष पर अत्याचार नहीं कर सकती, पर ये सारभौम सत्य नहीं है। आज के इस युगमें पुरुष भी स्त्रियों के अत्याचार के शिकार होते हैं और त्रासदी झेलते और सहते रहते हैं। ये बात और है कि औरतों की इस सन्दर्भ में संख्या अधिकाधिक है, परन्तु यह मान लेना कि हर बार औरत ही सही होती है, यह न्यायसंगत नहीं होगा। स्त्री को हमेशा कमज़ोर और बेबस समझने में लगे रहते हैं लोग, परन्तु पुरुष कभी-कभी कितना बेबस होता है, इस बात को कोई भी उद्घाटित नहीं करता। जो पीड़ित है उसे सिर्फ और सिर्फ पीड़ित ही समझना चाहिये।



उसे औरत या मर्द के रूप में नहीं देखना चाहिये। प्रकृति ने तो पुरुष को शरीर से कठोर तो बनाया है परन्तु सहनशक्ति उसमें कम होती है, वहीं स्त्री को शरीर से कमजोर बनाया है पर उसमें सहनशक्ति अधिक होती है और कुछ प्रभावशाली स्त्रियाँ जब इस बात को समझ लेती हैं तो वो इस कमजोरी का फायदा उठाने लगती हैं। महिलाओं को लेकर पुरुष की सोच उसे कमजोर बना देती है। महिलाओं के प्रति पुरुषों का आकर्षण कुछ अधिक ही होता है और इसी कारण वो स्त्री के अत्याचार के शिकार होते रहते हैं। कहीं कहीं पर तो ऐसा पाया गया है कि पुरुषों में मानसिक डिप्रेशन नामक भयानक बीमारी का कारण भी प्रभावशाली स्त्रियों की प्रताङ्कना ही है। आज बहुत से नियम कानून स्त्री की सुरक्षा के लिये बनाये गये हैं और सभी कानूनों के आधार में ये धारणा है कि केवल स्त्री ही अत्याचार की शिकार होती है और इसी धारणा का प्रतिफल है कि कुछ प्रभावशाली औरतें पुरुषों को प्रताङ्कित करने से चूकती नहीं हैं।

मेरा अपना अनुभव ये कहता है कि पुरुष की अपेक्षा कुछ औरतें नाटकीय ढंग से अपनी बात को सही साबित करने में अधिक सक्षम होती हैं। पुरुषों पर होने वाले प्रताङ्कना की जानकारी इसलिये भी कभी-कभी नहीं हो पाती क्योंकि उनका पुरुष होना भी उनके लिये मुसीबत बनजाती है और उनका अहम् भी बीच में आ जाता है। दूसरा समाज के लिये जो कानून जितने औरतों के पक्ष में बने हैं उतने पुरुषों के लिये नहीं बने। वर्तमान में अधिकतर युवक विवाह करना ही नहीं चाहते, विवाह के स्वरूप को देखते हुए वे डेरे रहते हैं। मैं तो इतना जानती हूँ कि शोषण को कृत्य के आधार पर बॉटा जाना चाहिये। स्त्री या पुरुष होने के आधार पर नहीं। समाज और शासन को अपनी दृष्टि कोण में बदलाव लाना होगा क्योंकि आज के समय में पारिवारिक कानून का फायदा स्त्रियाँ कहीं न कहीं अपने निजी फायदे के लिये उठाती हैं। शासन इस तथ्य पर विशेष ध्यान दे और यह मनन करे कि जैसे सभी पुरुष एक समान नहीं होते वैसे सभी स्त्रियाँ भी समान नहीं होती। हर जगह रावण नहीं होता तो हर जगह सीता भी नहीं होती है।





द्वितीय पुष्प

संस्कारों से दूर होना है अपनों से दूर होना।

आधुनिकता के नाम पर कराते हैं नृत्य
हर रिश्तों की बुनियाद में है पैसा

मोनिका त्यागी राणा, लखनऊ,

अत्याचार, जुल्म के खिलाफ आवाज उठाने का अदम्य साहस, सनातन संगठन की प्रभारी, चेतना फाउण्डेशन की उपाध्यक्ष, अंग्रेजी और दर्शन में परास्नातक की योग्यता, सनातन शिरोमणि सम्मान से गौरवान्वित, वर्षों तक आदर्श शिक्षिका के रूप में कार्य, लखनऊ में नारी प्रगति के लिये समर्पित। बिना मतलब और बिना स्वार्थ के स्त्री वर्ग को कोई नहीं पूछता। दुख का यदि पहाड़ टूट पड़े फिर भी सब उसका मजाक बनाने से चूकते नहीं हैं। यदि कोई दुखी स्त्री मिल जाय तो उसकी मदद के लिये माँ बाप पर आरोप मढ़ देते हैं और कहते हैं कि आज के जमाने में माँ-बाप के रिश्तों का कोई मतलब नहीं होता। लोगों के आचरण में इतना परिवर्तन आ चुका है कि मन कभी कभी कह उठता है कि हर औलाद के किस्मत में माँ और पिता का ये रिश्ता हमेशा के लिये नहीं होता है। आज तो यह लगने लगा है कि पैदा करने वाला उसी का होता है जिसके पास समय के साथ अत्याधिक सम्पत्ति अर्जित होती है। यदि किसी के पास चार औलाद हो तो चारों औलादों में जिसके पास पैसा ज्यादा होता है लोग और अधिकांश सदस्य उसी का गुनगान करते रहते हैं और जब उससे स्वार्थ सिद्ध करनी होती है तो कहते हैं मदद गुप्त रूप से करो क्योंकि यह कहा गया है कि दान तो गुप्त करना ही उचित होता है, इसके पीछे उनकी प्रतिष्ठा का परदा उठता नजर आता है। परन्तु आज तो देने वाले का नाम ज्यादा लिया जाता है और इसका परिवार सहित समाज और शासन सबमें सुन्दर नियम बनाकर पवित्रता का जामा पहना दिया जाता है। बहन अपने भाई को राखी तो बाँधती है तो अब यहाँ भी पवित्र रिश्ते में अधिकतर बचपन से ही स्वार्थ या आज इस राखी के बदले में क्या मिलेगा यह उत्कंठा



दिखाई देने लगती है। कहीं-कहीं तो यह पहले ही तय हो जा रहा है कि मैया हमें इस बार राखी में अमुख तौफा आपसे लेना है। पत्नियों की व्यथा थोड़ा सा अलग हटकर है। वह मानो अपने पति की एक घोषित जागीर हो गयी है। आज इक्कीसवाँ सदी का पति जो चाहे उसे वही करना पड़ता है। एक समय ऐसा था जब हर रिश्ते का कभी अपना एक निश्चित दायरा होता था। आज कोई भी हो चाहे पुत्र हो, पुत्री हो, पिता हो, पति हो, पत्नी हो, किसी को किसी का लिहाज नहीं रह गया है। आधुनिकता के नाम पर आज सारे शर्मों ह्या को त्याग कर कुछ लोग महफिलों में अपने पाल्यों को नचाते हैं, अपनी बेटियों तक को शर्मों ह्या को भूल कर सार्वजनिक नृत्य में देखते हैं, और खुद ही तालियाँ बजाते हैं, वे बच्चियाँ संस्कार हीन बनती जाती हैं और फिर इसके बाद यही लोग कहते हैं कि यहाँ औरतों के लिये इन्साफ नहीं होता है। एक लाईन कहकर बात खत्म की जा सकती है- पहचान न रही इन्सान को इन्सान की, रिश्तों की कहानी बन गयी एहसान की।





तृतीय पुष्प

कुछ मुक्तक

‘‘खुद ही तूफाँ को बुलाया और खुद अंजाम दी

मोनिका त्यागी रणा, लखनऊ,

हालत नहीं थे ऐसे बस कुछ ही साल पहले,
सब कुछ बदल गया यूँहीं बस, कुछ ही साल पहले,

जाना न कभी अश्क क्यों अक्सर बरसते हैं-
हँसते हुए जब वह रुलाया कुछ ही साल पहले,

जब हुंआ एहसास हमको उसके खोने का,
‘मोनि’, चला गया सभी कुछ, कुछ ही साल पहले।

तबाही का तेरा आलम वो ‘मोनि’, क्या नया आगाज था,
खुद ही तूफाँ को बुलाया और खुद अंजाम दी।

कह गया ‘मोनि’ कभी भी, वक्त भरता जख्म है।
पर नहीं जाना, दवा ही दर्द का खुद दर्द है।



चतुर्थ पुष्प

मृत्यु और मोक्ष

“मधुरता मन में ना होती तो, शब्द जहर बन गया होता,
 दर्द हृदय में ना होता तो, मनुष्य पत्थर बन गया होता,
 वासना प्यार को ना छलती तो, प्रेम वरदान बन गया होता,
 प्रार्थना भक्त में ना होती तो, भक्त भगवान बन गया होता”

‘उनका कोई गम नहीं जो,
 तूफँ के मौजों में डूबे
 गम तो उनका है जो,
 डूबे हैं किनारों पर।’

मोनिका त्यागी राणा, लखनऊ,

मौत और मोक्ष में इतना ही अंतर है जो बार बार दुनियाँ में जन्म लेकर आता है, बार बार जन्म लेने के बाद भी मृत्यु को अंगीकार करने को बाध्य होता है वह मौत है, और जो दुबारा जन्म ना लेना पड़े साथ ही प्रकृति की शक्तियों को अपने में पूरी तरह समाहित कर जन्म मृत्यु से परे होना मोक्ष है अर्थात् दुबारा जन्म न लेने की जहमत से पूर्ण मुक्ति। दुनियाँ भी बड़ी अजीब हैं। जब कोई मरता है तो उसकी अर्थी को कंधा देने वाले ‘‘राम नाम सत्य है’’ कहते हैं, जो शाश्वत सत्य है तो उसे मुर्दे को सुनाते हैं जो सुन ही नहीं सकता। वैसे इसका अर्थ भी नहीं समझते और ना ही अपने जीवन में कभी इसको जपते हैं। काश इन्सान जीते जी श्री राम शब्द के शक्ति और महत्ता को समझ लेता तो उसके जीवन के जीने का मर्म समझ में आ जाये। यह एक अजीब विडम्बना है कि लोग जीते जी खुद श्रीराम शब्द के महत्व को न समझ कर शव यात्रा में किसी अलौकिक सत्ता में मनन करते रहते हैं। शायद निर्जीव शरीर उसे सुनता है कि नहीं ये तो नहीं मालूम पर शव यात्रा में शामिल लोगों को कुछ समय के लिये जरूर समझ में आ जाता है।





हर व्यक्ति ये सोचता है कि उसे सुन्दर मृत्यु नसीब हो। उसे कोई कष्ट न हो। समय आने पर उसे बिना किसी परेशानी के मृत्यु नसीब हो। ये उन्हें समझ में नहीं आता कि मृत्यु को सुधारने से मृत्यु नहीं सुधरती, हाँ यदि जीवन में सुधार लाया जाय, श्रीराम द्वारा मोक्ष की आस रखी जाय तो निश्चय ही जीवन में मोक्ष का रास्ता खुला मिलेगा। मोक्ष का अर्थ है जीवन के मायावी कष्टों से मुक्ति और जन्म मृत्यु से हमेशा के लिये छुटकारा। जीवन को सुधारने श्री राम का तारतम्य जोड़ने से मृत्यु पर जरूर हम अपना प्रभाव बना लेते हैं। जब मृत्यु आयेगी तब कुछ काम नहीं आयेगा। सारी उम्र की कर्माई गयी दौलत भी एक लम्हा आपको उधार नहीं दिला पायेगा क्योंकि जब मृत्यु आयेगी उस समय कोई कुछ भी नहीं कर पायेगा। न तो कोई तन्त्र मन्त्र काम आयेगा न ही पैसा। सिर्फ आपके कर्म ही होंगे जा उस समय आपको सद्गति और मोक्ष की ओर ले जा सकते हैं और इस जन्म और मरण के चक्रवृह से बाहर निकाल सकते हैं।

अगर जीवन के चन्द लम्हों को भी आप सार्थक करते हैं तो जीवन तो सँभलेगा ही मृत्यु भी सँभल जायेगी। प्रत्येक मनुष्य तो यह जानता है कि मृत्यु तो अपनी अमानत है, आनी ही है फिर भी अज्ञान के अन्धकार में भटकता हुआ इससे अनभिज्ञ रहता है। यह ऐसा विधान है कि जिसे मनुष्य अपने सद् कर्मों से अपने लिये नियन्त्रित कर सकता है पर स्वम् परमात्मा इसे बदल नहीं सकते।

“मॉस के पुतले, कभी ना कर तू भी इतना घमण्ड,
सब तेरा यूँ देखते ही खाक में मिल जायेगा,
तेरा मैं इक दिन अन्धेरे में कही खोकर मनुज,
कुछ क्षणों में तेरा सब कुछ राख में मिल जायेगा।”





पंचम पुस्तक

तनहाई के पल

मोनिका त्यागी राणा,
विशेष प्रतिनिधि, लखनऊ

तमाम उम्र बिता दी सबको मनाने में,
मगर हम आज भी तनहाँ हैं इस जमाने में,
किसी ने नाम दिया और कोई बदनाम किया,
कोई लाया है हमें खांच के मयखाने में।

किसी ने हाल ना पूछा करीब ला करके,
आज शामिल रहा अर्थी मेरी सजाने में,
अपने खाबों के तस्वीर जलाये हमने,
सभी के जलवों पे इक रौशनी लाने के लिये।

आज खामोश हैं जब लब तो सवाल करते हैं,
कितने अजीब हैं ये लोग इस जमाने के,
जिन्दगी थी तो कभी चैन से जीने ना दिया,
और आज देर भी नहीं की मुझे जलाने में।





छठवाँ पुष्प

ऐतिहासिक/एक्सक्लूसिव/श्री मोती बीए सम्मान से पुरस्कृत
शाहजहाँपुर की क्रान्तिकारी जर्मीं।

मोनिका त्यागी राणा, लखनऊ

शाहजहाँपुर से

सत्याग्रह आन्दोलन का स्थगित होना कारण बना काकोरी काण्ड का।
आन्दोलन के वापसी से क्षुब्ध उग्र दल ने पकड़ा क्रान्ति का रास्ता।
केन्द्र बना शाहजहाँपुर।

आज शानदार आजादी का पैगाम का परचम जो लहरा रहा है उसमें शामिल है अनगिनत क्रान्तिकारियों की शहादत और बलिदान की दास्तौं जो भारत का कण-कण कहता है। इसी पावन स्थलों की श्रृंखला में प्रस्तुत है हमारी विशेष प्रतिनिधि मोनिका त्यागी की शाहजहाँपुर से वहाँ की मिट्टी की दास्तान -सम्पादक

क्रान्तिकारियों शर्चीन्द्र नाथ सान्याल के अनुसार क्रान्तिकारियों ने राष्ट्रीय मुकित संघर्ष को आगे बढ़ाने के लिये उत्तेक की भूमिका निभाई। शाहजहाँपुर के इतिहास में बहुत से क्रान्तिकारियों ने जन्म लिये और अपनी ऐतिहासिक कृत छोड़ गये। 9 अगस्त 1925 में काकोरी ट्रेन की डकैती भारत के क्रान्तिकारी आन्दोलन में एक विशिष्ट स्थान रखता था। यह सिर्फ ब्रिटिश सरकार पर क्रान्तिकारी और राजनैतिक हमला नहीं था बल्कि 1922 में महात्मा गांधी द्वारा अचानक से असहयोग आन्दोलन स्थगित करनेके परिणाम स्वरूप उस खालीपन को भरने और युवकों में उत्पन्न निराशा का परिणाम था। असहयोग आन्दोलन की समाप्ति केबाद संयुक्त प्रौत में क्रान्तिकारी गतिविधियों ने शर्चीन्द्र नाथ सान्याल के नेतृत्व में पुनः ऑंगड़ाई ली। इलाहाबाद में इनकी भेंट देवनारायण भारतीय से हुई और फिर महावीर त्यागी की सहायता से शाहजहाँपुर में रामप्रसाद बिस्मिल और असफाक उल्ला खाँ से हुई। ज्ञातव्य हो कि दिसम्बर 1923 में गया में हो रहे कॉग्रेस



के अधिवेशन में रामप्रसाद बिस्मिल और असफाक उल्ला खाँ और प्रेम किशन खन्ना ने भी भाग लिया था। जुलाई 1923 में योगेश चन्द्र चटर्जी ढाका अनुशीलन समिति के प्रतिनिधि के रूप में संयुक्त प्रॉन्ट में आये। क्रान्तिकारी दल को सक्रिय करने के लिये उन्होंने प्रॉन्ट के अनेक नगरों में भ्रमण किया। 1924 में कई बार शाहजहाँपुर आये। बिस्मिल के माध्यम योगेश दा असफाक उल्ला खाँ, रोशन सिंह, प्रेम किशन खन्ना के सम्पर्क में आये और यहाँ से काकोरी ट्रेन डकैती के भूमिका का श्री गणेश हुआ। हालांकि डकैती डालना असामाजिक और अवैधानिक कार्य था परन्तु दल के अन्तिम लक्ष्य को देखते हुए बस प्रकार के कार्य गम्भीर नहीं थे। ये क्रान्तिकारी, देश की स्वतन्त्रता के लिये संघर्ष का कार्य कर रहे थे और इसके लिये उनके पास साधनों का अभाव था। अतः डकैती डालने का निर्णय उन्हें मजबूरी में लेना पड़ा था। शाहजहाँपुर के क्रान्तिकारियों ने काकोरी ट्रेन उकैती के पूर्व कई डकैतियाँ डाली थीं, जैसे- 23 जून 1918 को हरदोई के थाना शहाबाद के परेली में एक विधवा ब्राह्मणी के घर डकैती डाले। सरकारी रिपोर्ट के अनुसार डकैती में 10,000 रुपये लूटे गये। इस डकैती में बिस्मिल के अतिरिक्त राजराम भारती, गया सिंह चन्देल भी शामिल थे।

संडाखेरा तिलहर थाना निगोही में जून 1918 में ग्राम प्रमुख के घर ढाका डालने के उद्देश्य से गये परन्तु ग्रामवासी सतर्क हो गये और खाली हाथ आना पड़ा।

ढकिया, हमीदनगर, पुवायाँ, शाहजहाँपुर में 29 सितम्बर 1918 में डकैती डाली गयी जो विफल रही। क्रान्तिकारियों ने ग्राम बमरौली पीलीभीत में 25 सितम्बर 1924 को बलदेव प्रसाद के मकान पर डकैती डाली जिसमें 600 रुपया नगद और 4000 के गहने इन्हें मिले।

क्रान्तिकारियों ने ग्राम बिचपुरी पीलीभीत में 9 मार्च 1925 को टोटी नामक सेठ के मकान पर डकैती डाली। काकोरी ट्रेन डकैती-

अगस्त 1925 की शाम को दस क्रान्तिकारी डाउन यात्री गाड़ी में शाहजहाँपुर स्टेशन से सवार हुए। गिनती में ये दस फौलादी झरादों के साथ आगे बढ़ रहे थे। दल का नेतृत्व राम प्रसाद बिस्मिल कर रहे थे। इनके अलावा दल के अन्य सदस्यों में राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी, असफाक उल्ला खाँ, मन्मथ नाथ गुप्त, चन्द्र शेखर आजाद, बनवारी लाल, मुकन्दी लाल, मुरारी लाल, केशव चक्रवर्ती, शचीन्द्र नाथ बख्ती थे। योजना के अनुसार तीन लोग राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी, असफाक उल्ला खाँ और शचीन्द्र नाथ बख्ती द्वितीय श्रेणी के डिब्बे में सवार हुए। इनका काम था निश्चित जगह पर जंजीर खाँच कर गाड़ी रोकें। इस टुकड़ी का नेतृत्व असफाक उल्ला खाँ कर रहे थे। जब ट्रेन काकोरी



स्टेशन से लखनऊ की ओर जाने लगी तो लगभग एक मील आगे ब्रिटीश श्रेणी में मौजूद क्रान्तिकारियों ने जंजीर खींच दी और ट्रेन रुक गयी। ट्रेन के रुकते ही गार्ड उतरकर जिस डिब्बे से जंजीर खींची गयी थी उस डिब्बे का पता करते हुये आगे बढ़ा। क्रान्तिकारी भी तत्काल बाहर आ गये और उन्होंने एक हवाई फायर करते हुये तत्काल यात्रियों को अपने डिब्बे में वापस चले जानेको कहा, साथ ही ये घोषणा की गयी कि किसी को कोई हानि पहुँचाने का इरादा इनका नहीं है। ये केवल सरकारी सम्पत्ति को लूटना चाहते हैं। क्रान्तिकारियों के लिये ये आदेश था कि किसी भी व्यक्ति पर गोली न चलायें। केवल रुक-रुक कर हवाई फायर करते रहें। फिर भी हरदोई का एक व्यक्ति अमजद अली अपनी मूर्खता के कारण मारा गया। दल के अन्य सदस्य गार्ड के डिब्बे में चढ़ गये और उसमें रखा सन्दूक उतार लिये। जिस समय असफाक उल्ला खाँ सन्दूक तोड़ रहे थे उसी समय दूसरी लाईन पर एक और ट्रेन तेजी से आ रही थी। क्रान्तिकारियों को शंका हुई कि कहाँ गाड़ी यहाँ रुक गयी तो क्या होगा, पर ट्रेन तेजी से निकल गयी। दस मिनट के अन्दर ही सन्दूक तोड़कर उसमें से सब थैले निकाल कर पोटलियाँ बना ली गयीं। इसके बाद सारा पैसा लेकर वे चौक के तरफ से लखनऊ में प्रवेश कर गये। इस क्षेत्र में वेश्याओं का मुहल्ला होने के कारण यहाँ रात भर चहल पहल रहती थी। यहाँ किसी के सन्देह होने की सम्भावना नहीं थी। इस रेलवे डकैती के सफलता पर राम प्रसाद बिस्मिल ने लिखा है, “साधारणतया: बहुत से लोग इस बात पर विश्वास करने में भी संकोच करेंगे दस नवयुवकों ने गाड़ी खड़ी कर अंग्रेजी सम्पत्ति को लूट लिया।”

ब्रिटिश सरकार पूरी तरह आश्वस्त थी कि रेल डकैती क्रान्तिकारियों का कार्य है क्योंकि डकैती का राजनैतिक उद्देश्य स्पष्ट हो चुका था। सरकार ने डकैती में शामिल किसी भी अभियुक्त को पकड़ने में मदद करने वाले को 5000 रुपये ईनाम देने की घोषणा कर दी। लखनऊ में गोविन्द चरणकर को गिरफ्तार किया गया तो उनके कमरे से पार्टी के संविधान का पीला कागज प्राप्त हुआ। सितम्बर 1925 को सात संदिग्ध लोगों के घर छापे डाले गये। मन्मथ नाथ गुप्त को बनारस में गिरफ्तार किया गया। उनके मकान की तलाशी में दि रिवोल्युशनरी पर्चे के टाईप अंश मिले। राम प्रसाद बिस्मिल को उनके निवास स्थान से गिरफ्तार किया गया। उसी दिन प्रेम किशन खना, इन्द्र भूषण मित्र, हरगोविन्द और बनारसी लाल को पकड़ लिया गया। ठाकुर रोशन सिंह भी पुलिस की पकड़ में आ गये। कानपुर में कांग्रेस कार्यालय सहित क्रान्तिकारी वीरभद्र तिवारी और प्रताप



समाचार पत्र के सहायक सम्पादक सुरेश चन्द्र भट्टाचार्या के यहाँ छापे मारे गये। राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी के यहाँ छापे मारे गये पर ये बम बनाने की ट्रेनिंग कराने कलकत्ते चले गये थे। राजकुमार सिन्हा को गिरफ्तार किया गया। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के जिस कमरे में वो रहते थे उस कमरे की तलाशी में दो राईफलें पकड़ी गईं। राम कृष्ण खत्री पूना में पकड़े गये। भाषेन्द्र नाथ सान्याल इलाहाबाद में पकड़े गये। शचीन्द्र विश्वास को लखनऊ में, विष्णु शरण को मेरठ में, शिव चरण लाल को मथुरा में, बनवारी लाल को रायबरेली में, मुकुन्दी लाल को बनारस में, असफाक उल्ला खाँ को दिल्ली से गिरफ्तार किया गया। कुन्दन लाल और चन्द्र शेखर आजाद को फरार घोषित किया गया। इस प्रकार कुल गिरफ्तारियाँ तो हुईं उनमें शाहजहाँपुर से, “राम प्रसाद बिस्मिल, बनारसी लाल, प्रेम किशन खन्ना, असफाक उल्ला खाँ, लाला हरगोविन्द, इन्द्र भूषण मित्र, ठाकुर रोशन सिंह”, कानपुर से “बीरभद्र तिवारी, रामदुलारे त्रिवेदी, गोपी मोहन, राजकुमार सिन्हा, सुरेश चन्द्र भट्टाचार्या”, इलाहाबाद से, “शीतला सहाय, भूषेन्द्र नाथ सान्याल, ज्योति शंकर दीक्षित”, बनारस से, “दामोदर स्वरूप सेठ, मन्मथ नाथ गुप्त, इन्द्र विक्रम सिंह, मुकुन्दी लाल, राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी, शचीन्द्र नाथ बखरी, रामनाथ पाण्डेय, डीडी भट्टाचार्या” आगरा से, “चन्द्रधर जौहरी, शिव चरण लाल शर्मा, चन्द्र भाल जौहरी” एटा से, “बाबूराम वर्मा” लखनऊ से, “हरनाम सुन्दर लाल, शचीन्द्र नाथ विश्वास, गोविन्द चरणकर” लाहौर से, “मोहन लाल गौतम”, बंगाल से, “शरद चन्द, कालिदास बोस” मेरठ से, “विष्णु चरण दुबलिस”, पूना से “राम कृष्ण खत्री” रायबरेली से “बनवारी लाल”, कलकत्ता से, “योगेश चन्द्र चटर्जी” पकड़े गये।

जेल पहुँचते ही गुप्तचर विभाग ने ऐसी व्यवस्था की कि सब अभियुक्त एक दूसरे से अलग रखे जाय। पुलिस सरकारी गवाह बनाने की जी तोड़ प्रयत्न कर रही थी और अन्त में अपने हथकण्डे में सफल हो गयी। शाहजहाँपुर से बनारसी लाल और इन्द्र भूषण मित्र गिरफ्तार होते ही सरकारी गवाह बन गये। शचीन्द्र नाथ सान्याल जो देशद्रोह के अपराध के कारण दो साल के लिए जेल में थे, उन्हें बंगाल से मुकद्दमे के लिये लखनऊ लाया गया। इसी प्रकार राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी को बंगाल की जेल से लखनऊ लाया गया। यह केश सरकारी अभिलेखों के अनुसार काकोरी केस किंग बनाम रामप्रसाद बिस्मिल के नाम से जाना जाता है। इस केस में चार क्रान्तिकारियों को 19 दिसम्बर 1927 को फॉर्सी देने का फैसला आया लेकिन ये अफवाह फैल गया कि 18 दिसम्बर को गोंडा जेल



से राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी के भगा ले जाने का प्रोग्राम है इस कारण इन्हें 17 दिसम्बर 1927 को गोंडा जेल में फॉसी दे दी गयी। 19 दिसम्बर 1927 को सुबह गोरखपुर जेल में रामप्रसाद बिस्मिल को फॉसी दे दी गयी। फॉसी देते समय इनके हाथ में गीता और होंठों पर वन्देमातरम् था। 19 दिसम्बर 1927 को ही सुबह फैजाबाद जेल में असफाक उल्ला खाँ को फॉसी दे दी गयी। फॉसी पर जाते समय इनके हाथ में कुरानेपाक का बस्ता था और होंठों हाजियों की तरह आयत पढ़ते हुये ये फॉसी पर चढ़ गये। 19 दिसम्बर 1927 को सुबह इलाहाबाद जेल में ठाकुर रोशन सिंह को फॉसी दे दी गयी। फॉसी देते समय इनके हाथ में गीता और होंठों पर ओम् वन्देमातरम् था।

“मालिक तेरी रजा रहे, तू ही तू रहे,
बाकी न मैं रहूँ, न मेरी आरजू रहे,
जब तक जाँ मैं जाँ लहू मैं लहू रहे,
तेरा ही जिक्र हो या तेरी जुस्तजू रहे।”

-राम प्रसाद बिस्मिल

“तंग आकर हम भी उनके जुल्म के बेदाद से,
चल दिए सू-ए अदम् जिन्दाने फैजाबाद से।”

- असफाक उल्ला खाँ



सातवाँ पुष्प

सत्य का बोध कराने वाला, सत्य के मार्ग को बताने वाला धर्म ही सनातन धर्म है।

मोनिका त्यागी राणा, लखनऊ

सत्य का बोध कराने वाला, सत्य के मार्ग को बताने वाला धर्म ही सनातन धर्म है जो अनादि काल से चलता चला आ रहा है। इसका आज तक प्रारम्भ और अन्त कोई नहीं जान सका है। हिन्दू धर्म को सनातन धर्म इसलिये कहा गया कि हिन्दू धर्म ही एक मात्र ऐसा धर्म है जो ईश्वर तक पहुँचने, आत्मा को जानने और मोक्ष को प्राप्त करने में मदद करता है। मोक्ष केवल एक मात्र हिन्दू धर्म में ही सम्भव है। ध्यान, मौन और तप यही मोक्ष का मार्ग है। सनातन धर्म ही मोक्ष का ज्ञान कराता है। आत्म ज्ञान और ईश्वर का ज्ञान का मार्ग मोक्ष है। यही सनातन धर्म का सत्य है। सत्य, अहिंसा, दया, जप, तप, क्षमा, यम नियम ये सनातन धर्म के मूल तत्व हैं।

॥ ॐ ॥ असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योर्तिगमय, मृत्योर्मा अमृतं गमय ॥ - वृहदारण्य उपनिषद्

“हे परमात्मा, हमें असत्य से सत्य की ओर ले चलो, अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो, मृत्यु से अमरत्व की ओर ले चलो।” सनातन धर्म यही मार्ग दर्शन करता है कि अज्ञान के घोर अँधेरे में घिर जाने से पहले ही सत्य का मार्ग अपना लो, तभी अमरत्व प्राप्त होगा और इस मार्ग पर चलने के लिये सनातन धर्म की एकमात्र श्रेष्ठता के क्रम में सर्वोपरि है।

जिस प्रकार जड़ पॉच तत्व से दृश्यमान हैं, “आकाश, वायु, जल, अग्नि और पृथ्वी”, ये सब सत्य की श्रेणी में आते हैं। ये अपना सूप तो बदलते हैं पर समाप्त नहीं होते। उसी प्रकार प्राण और आत्मा भी अमर है। आत्मा शरीर तो बदल लेती है, पर खुद नहीं बदलती। शरीर का अस्तित्व समाप्त हो जाता है पर आत्मा का अस्तित्व बना रहता है। इसलिये यह आवश्यक है कि यदि जन्म-मरण से अलग मोक्ष पाना है तो सनातन धर्म का मार्ग ही अन्त में अपनाना पड़ेगा। यदि हम कहीं राम कथा या भागवत कथा सुनते हैं तो कथा वाचक कभी न कभी उस कथा में यह कहते हैं कि “सत्य सनातन धर्म की जै” लेकिन सनातन संस्कार और आदर्श से परिचित नहीं हो पाते। सनातन से तात्यपर्य है, “जो सदा के लिये है, सदा के लिये रहेगा। जिसका ना तो आरम्भ है और ना ही अन्त। जब से सृष्टि आरम्भ हुयी है, केवल सनातन धर्म ही है। सत्य सनातन है। परमात्मा की वाणी का नाम वेद है। वेद का अर्थ ज्ञान है।”





आठवाँ पुष्प

जीवन दर्शन भाग-1

अनुभूतियों जीवन की : कभी धूप कभी छाँव

मोनिका त्यागी, लखनऊ

जिन्दगी का सर्वरूप धूप और छाँव जैसी होती है। कभी प्रकृति और सांसारिक समस्याओं की चिलचिलाती धूप में इन्सान जलता रहता है और चलता रहता है। अचानक प्राकृतिक या सामाजिक सहारा रूपी छाँव मिलने पर खुश और संतुष्ट हो जाता है। उस वक्त उसे उस छाँव की खुशी की जो अनुभूति होती है उसकी कीमत का एहसास हो जाता है। इन्सान जो हर पल सुख की छाँव में ही जीता आया हो और कभी उसे समस्याओं की चिलचिलाती धूप का सामना ही न किया हो और उसे अगर सांसारिक दुःखों के तीव्र धूप से गुजरना पड़े तो वह खुद सहन नहीं कर पाता, उसका असीमित आत्मबल टूटने लगता है। यही संसारिक मानव के जीवन के सुख और दुःख की स्थिति होती है। दुःख से गुजरने वाला इन्सान सुख की अहमियत को समझता है और दूसरे की पीड़ा को भी महसूस करता है पर हमेशा सुख में रहने वाला व्यक्ति दुःख को नहीं समझता और इसका असर ऐसा पड़ता है कि वो किसी पीड़ा को समझने लायक भी नहीं रहता और जिस दिन उसको दुःखों का सामना करना पड़ता है वो लड़खड़ाने लगता है और फिर टूट जाता है। ऐसा भी देखा गया है कि कभी-कभी हमेशा दुःखों से पीड़ित रहने वाला इन्सान ऐसा पत्थर बन जाता है कि उसमें निगेटिव ऊर्जा घर कर जाती है और वो दूसरों के सुख को भी नहीं देख पाता और प्रतिबन्धिता के आक्रोश में ऐसा जकड़ता है कि स्वंम को विकट स्थिति से निकालने के बजाय दूसरों को कष्टों के दल-दल की स्थिति में पहुँचाने के लिये दृढ़संकल्पित हो जाता है।





नववाँ पुष्प

जीवन दर्शन भाग- 2

जीवन की शतरंज : एक प्रकृति की चुनौती

मोनिका त्यागी, लखनऊ

आज प्रत्येक आदमी की ऐसी धारणा बन गयी है कि वह अपनी पसन्द नापसन्द की हड़ें खुद ही तय कर रहा है। उसी में उसे अपनी जिन्दगी रास आ रही है। जब दूसरे लोग इन हड़ों को तय करते हैं तो ये हड़ें केन्द्र बिन्दु बन जाती हैं तब आदमी को अपने जीवन से मोह भंग होने लगता है और वो जीवन समाप्त करने में ही उसे रास आता है। उसे ऐसा लगता है कि संसार एक शतरंज की बिसात है और हम एक उसके मोहरे हैं। “शतरंज की बाजी खेली गयी, बस मोहरा मुझे बनाया गया, रोशन महफिल करने के लिये, बस मेरा वजूद जलाया गया।” क्यों कोई किसी को वैसे नहीं अपनाता जैसा वो ढला होता है। क्यों हम किसी को बदलने की कोशिश करते हैं और जब ऐसी कोई कोशिश की जाती है तो इसे खराब होने लगते हैं और फिर ऐसा दौर शुरू होने लगता है कि प्रत्येक चरित्रिवान एक दूसरे पर इलजाम उठोपने लगता है। यह निर्विवाद है कि प्रकृति हर कोई एक जैसा नहीं बनाती, सबकी सोच अलग समझ अलग होती है। समझने और समझाने का तरीका भी सांसारिक जीवन का एक महत्वपूर्ण शिक्षा का आयाम होता है। “जीवन जीना आसान नहीं, गम भी छुपना आसान नहीं, जीना सीखा जो गर कोई, साधारण वह इन्सान नहीं।” दुनिया में यदि हर कोई एक जैसा तो संसार का स्वरूप जरा सोचे कैसा होगा। विभिन्नतायें होने के कारण ही ये संसार इतना खूबसूरत माना जाता है। धूप के बाद छाँव, सूखे के बाद बारिस, दुख के बाद मुख, दर्द के बाद जो खुशी मिलती है उस आनन्द की अनुभूति उसी को होती है जो हर वस्तु को उसी रूप में उसे स्वीकार करे।





दसवाँ पुष्प

राजनीति

भाजपा के सराहनीय कार्य

मोनिका त्यागी, लखनऊ,

सरकारें तो आती जाती रहती हैं पर जिसके द्वारा सराहनीय कार्य किये जाते हैं वो यादगार होता है। यूपी चुनाव को लेकर आजकल जो कुछ भी चल रहा है उससे एक बात सामने निकल कर आती है कि यदि सत्ता में रहना है तो सत्ता साधने की सबसे अहम कड़ी है दलितों का वोट। 2017 में होने वाले यूपी विधान सभा इलेक्शन से पहले सभी पार्टियाँ जनता को लुभाने के लिये तरह-तरह के हथकण्डे अपनाने में लगी हैं। यदि इन कुछ वर्षों में समाजवादी पार्टी के कुछ कार्यों के परिणाम को देखा जाय तो परिणाम निगेटिव ही नजर आयेगा। इस काल में केवल भ्रष्टाचार और गुण्डागर्दी को ही बढ़ावा मिला है। जो अपने परिवार में एक राय नहीं बना सकते वे प्रदेश को एक सूत्र में क्या बांध पायेंगें। जनता को कहाँ से एकता के सूत्र में बांधेंगें। सपा के प्रदेश प्रवक्ता राजेन्द्र चौधरी का कहना है कि चार पाँच सालों में सरकार ने केवल प्रदेश की तरक्की के लिये काम किया। शायद चौधरी साहब यूपी में बढ़ते अपराधों की रेट लिस्ट भूल गये हैं तो याद दिला दें कि वर्ग विशेष को सहूलियत पहुँचाने के लिये हर थाने में दरोगा भी एक वर्ग विशेष का बिठा दिया गया। इन पाँच सालों में अपराध अपने चरम सीमा पर रहा है। यदि सभी अपराधों पर नजर डाली जाय तो बहुत कुछ सामने आ जायेगा। सरकार दावा करती है कि मेट्रो का निर्माण बड़ी तेजीसे हुआ है जिसे केन्द्र सरकार द्वारा कराया गया है। शायद इसी कारण ट्रॉयल लेने से पहले ही केवल जनता को लुभाने के लिये मेट्रो का उद्घाटन पहले ही कर दिया गया। सपा के कार्य काल में जो प्रदेश की स्थिति हुई है वो किसी से छुपी नहीं। अब यदि एक दृष्टि कॉमिटी प्रदेश सचिव विजयेन्द्र त्रिपाठी जी की बातों पर भी डाली जाय तो उनका कहना है कि हमने केन्द्र से लेकर राज्यों तक केवल विकास कार्य ही किये हैं, जनता और देश की भलाई के लिये ही अग्रसर रहे हैं परन्तु क्या कॉमिटी अपने द्वारा किये गये विकास कार्यों की विवेचना कर सकती है, नहीं, क्योंकि कॉमिटी सरकार ने केवल अपनी मनमानी की है। गरीब वर्ग को



और गरीब बनाया और अमीर वर्ग को और अमीर हमारे देश का पैसा बाहर जाता रहा। कांग्रेस सरकार ने भी हमेशा व्यापारी वर्ग के लिये कार्य किया। बड़ी-बड़ी कम्पनियों को बड़ा करने में लगी रही और फिर वही हुआ, उनके मनमानेपन का अन्त जनता द्वारा किया गया। जनता ने कांग्रेस को उसकी हकीकत से अवगत करा दिया। अब बसपा के विषय में यदि बात की जाय तो ऐसा प्रचार है कि उनका मिशन तो टिकट बेचना और खरीदना और फिर फतह हासिल करना ही रहा है। बसपा की मुख्यमो मायावती जी ने बनारस से शुरूवात की। देश की सांस्कृतिक और शैक्षणिक राजधानी काशी में मायावती जी ने सेवापुरी विधानसभा से एन.आर.एच.एम. घोटाला में शामिल आरोपी महेन्द्र पाण्डेय को टिकट दिया। महेन्द्र पाण्डेय के घर, दूकान और गोदाम पर सी.बी.आई. छापे डाल चुकी है। जब सरकार ही विवादास्पद लोगों की हो तो वहाँ देश हित कहाँ रहा। अब यदि बी.जे.पी. के कार्यों पर नजर डाली जाय तो उसके द्वारा किये गये कार्यों से केवल देश का हित ही नजर आयेगा। मोदी जी के प्रधानमन्त्री बनते ही उन्होंने जनता के लिये अपना पिटारा खोल दिया। प्रधानमन्त्री बनते ही उन्होंने बिना छुट्टी लिये केवल जनता की भलाई के लिये काम किया। आप बीजेपी द्वारा किये गये कार्यों की विवेचना करें।

- गरीबों के लिए बैंक खाते खुलवाकर उन्होंने सबसे अधिक पुण्य का काम किया।
- बड़ी बड़ी योजनाओं के साथ उन्होंने ऐसे भी अभियान चलाये जो कि देखने में छोटे थे पर असर व्यापक था, जैसे कि नीम कोटेड यूरिया, के प्रयोग को महत्ता प्रदान करने के लिये काफी बदलाव किये जिससे कृषि और कृषकों दोनोंको फायदा मिल सके।
- एल.ई.डी.बल्बों के बदलने का अभियान पर्यावरण के लिये फायदेमन्द साबित हुआ।
- जनपद में उज्ज्वला योजना के तहत एक लाख परिवारों को लाभान्वित किया जा रहा है।
- मोदी सरकार द्वारा रसायनिक उर्वरकों के दाम कम किये गये।
- आतंकवादियों को घर में घुस कर मारा गया।
- सबसे बड़ाकाम नोट बन्दी का जिसमें विश्व बैंक प्रमुख और पूर्व भारतीय बैंकर केरी कामथ ने दावा किया है कि लम्बी अवधि में देश की सरकार अर्थव्यवस्था और आम आदमी को बड़ा फायदा पहुँचना तय है। नोट बन्दी द्वारा होने वाली परेशानियों को जनता महसूस कर रही है परन्तु उसके फायदे भी सामने आ रहे हैं।
- भ्रष्टाचार पर लगाम नोट बन्दी द्वारा ही संभव हुआ है। 500 और 1000 रुपये की नोट बन्दी ने



प्रष्टाचार पर लगाम लगाई है।

-कैशलेस इकोनॉकी बनाने के लिये जरूरी है कि देश में ज्यादा से ज्यादा ट्रॉनजेक्शन डिजिटल माध्यमों से किया जाय।

-कालाधन खत्म जो हुआ तो नोट बन्दी से ही संभव हुआ।

-बन्द हुई समानान्तर इकोनॉमी देश में कोयले की खदान से लेकर सड़क किनारे चाय और सब्जी बेचने वाले इस समानान्तर अर्थव्यवस्था में शामिल रहते हैं।

-देश में टैक्स बेस भी बढ़ा।

-बैंकों की कमाई में ईंजाफा भी हुआ।

-सस्ता हुआ कर्ज।

इस साल किये गये बीजेपी के किये गये सराहनीय कार्यों की विवेचना आम जनता भी कर सकती है जो कार्य इस सरकार ने किया वो आज तक कोई सरकार उतनी सफल नहीं हो पायी।





ब्यारहवाँ पुष्प

वर्षों से शासन से उपेक्षा के शिकार, कुष्ठ रोगियों की, त्रासदी निराश्रय कुष्ठाश्रम ही इनका एकमात्र सहारा।

शासन से उपेक्षित कुष्ठाश्रम कुष्ठाश्रम के बच्चों के लिये कोई स्कीम नहीं

“अगर कुष्ठ रोगियों के लिये ऐसी ही उपेक्षा सरकार द्वारा होती रही तो गांधी, विनोवा भावे और राघवदास के आदर्शों का क्या जबाब होगा।”

मोनिका त्यागी, लखनऊ

जब देश आजाद हुआ था तो ऐसा लगा था कि अब इस देश से अन्य संक्रामक रोगों की तरह कुष्ठ रोग भी हमेशा के लिए चला जायेगा। ऐसा क्यों न जनता आस लगाये, महात्मा गांधी, विनोवा भावे, राघवदास जैसे संत इस रोग के उन्मूलन के लिये अपना सब कुछ समर्पित कर चुके थे पर आज कुष्ठाश्रम में रहने वाले रोगियों का सहारा केवल कुछ नेकदिल लोगों तक सीमित रह गया है। सरकार तो जैसे आँख मूँद कर बैठी हुई है। निराश्रय कुष्ठाश्रम, सहारनपुर एक लम्बे समय से कुष्ठ रोगियों की सेवा के लिये समर्पित है। 1964 से 38 कुष्ठ परिवार यहाँ रहते हैं। निराश्रय कुष्ठाश्रम के पास अपने सहयोगियों के दम पर कुछ सुविधा मुहैया हो जाता है पर शासन ने जैसे यह ठान खाता है कि उसे इन रोगियों से कोई लेना देना नहीं। इनके पास रहने के लिये आवास की भी समुचित व्यवस्था नहीं है। कच्चे आवास में ये कुष्ठ रोगी रहते हैं। नगर के सम्भ्रूत लोग और कमेटी के समर्पित सदस्य इन्हें भोजन और वस्त्र दान करते रहते हैं। अन्य देशों में आज कुष्ठ रोग का सफाया होता जा रहा है जब कि भारत में उपेक्षा के चलते इस रोग की अभी भी भयावहता बरकरार है। सरकार के आज सारे ऑकड़े खोखले साबित हो रहे हैं। इससे भी बढ़ी विडम्बना ये है कि कुष्ठाश्रम में रहने वाले वे बच्चे जो इस रोग से पूरी तरह मुक्त हैं उनके रोजगार के लिए सरकार के पास क्या योजना है। भारत वर्ष उन सन्तों की भूमिहै जिन्होंने कुष्ठ उन्मूलन का सपना सजोये हुए थे। आज जबकि कागजों में सैकड़ों कार्य कुष्ठ सहायतार्थ क्रियान्वित हो रहे हैं उसका कुछ प्रतिशत ही यदि सहारनपुर स्थित निराश्रय कुष्ठाश्रम के लिए विभाग समर्पित करे तो यह पुण्य का कार्य होगा। वैसे निराश्रय कुष्ठाश्रम ने शासन से सहायता की याचना की है देखना है कि शासन के अधिकारियों की कब नजरें इनायत होती है।

ज्ञानपत्र होता है।





बारहवाँ पुष्प

हिन्दी कविता

प्यार भरे दिन

मोनिका त्यागी, लखनऊ .

कहाँ गये वो किसे कहानियों के दिन,
कहाँ गये कागज के कशती के दिन,
मिट्टी से मिलती जो खुशियाँ बरसात की,
कहाँ गये प्यार भरे कलरव के दिन।

चौखट पर बैठी माँ बच्चों की राह में,
न जाने कहाँ गये वो माँ के इन्तजार के दिन,
वो गलियों में मिट्टी से खेलना,
न जाने कहाँ गये वो बे फिक्री के दिन।

आज सोते भी हैं तो कल के लिये,
न जाने कहाँ गये वो सुकून भरे दिन,
वो खुश हो जाना दादी के कहानियों से,
न जाने कहाँ गये वो सुभाषित भरे दिन।

दुनियाँ वालों ने इतना मजबूर किया सबको,
और कहते वही कहाँ गये वो प्यार भरे दिन।





तेरहवाँ पुष्प

आदमी की आज परिभाषा गयी।

मोनिका त्यागी, लखनऊ

भावनावों के अजीब जलवे हैं,
लूटते लड़के हैं सरेआम जब अस्मत को,
लड़कियों पर वो लगाते पहरे हैं।

तर्क उनके सिमट जाते चाल में,
बेबसी के अधखुले बस वस्त्र में।
बेबसी के वस्त्र में ये रीझते।

अपने बच्चों को नहीं ये सोचते,
भावनायें गैर हो तो और है,
अपने बच्चों के लिये कुछ और है।

अपनी गरिमा भावना में क्या गयी,
आदमी की आज परिभाषा गयी।





चौदहवाँ पुष्प

टूटती सॉसें

मोनिका त्यागी, लखनऊ

अनकही, इक अनसुनी पहेली बन गयी,
महफिलों में मैं अधेरा बन गयी,
आज तक जीती रही बेनाम सी,
बस कहानी मोड़ की मैं बन गयी।

यूँ नहीं ऐतबार है अपने कदम पर,
रोज इक धोखे से मैं झेली खड़ी हूँ,
तब गिरी, गिरती गयी, उठती रही,
नाखुदा कोई नहीं, खुद ही अड़ी हूँ।

क्या बयाँ करके गयी ये जिन्दगी,
क्या दिया और क्यूँ दिया समझे नहीं,
हम समझते ही रहे, और वो कभी का चल दिये,
जब हुआ राजे बयाँ वो शख्स पहचाना नहीं।

शब्दों के माया में उसने, मेरा सबकुछ लूट लिया,
अपना सुनकर धोखा खाया, जीवन अपना छूट गया,
रिश्ते सब बेकार हुये, जब मेरा दामन भींग गया,
क्या गैरों से कहना जब अपनों ने नाता तोड़ लिया।

दरवाजे पर सुनकर आवो वो सिसकी भी मेरी है,
चाहे जितनी दूरी कर लो दिल की चुम्बन भी मेरी है,
दूर भी रहकर जितना हँस लो, आँखे तो भर आयेगी,
हँसकर जी भर जब सोबोगे टूटती सॉसे मेरी है।





पञ्चहारों पुष्प

वेदों से जुड़े और प्रकृति से अनुकूलन पायें

-मोनिका त्यागी राणा, लखनऊ

“हमने दो, चार व्यक्तियों से पूछा कि आप जब प्रभु के पास जायेंगे तो वहाँ की भाषा क्या होगी, समाधान निकला वेदों की ओर चलो। इस सन्दर्भ में प्रस्तुत है सनातनी समाज की स्तम्भ मोनिका त्यागी के विचार/ तथ्यों की अन्य व्याख्या आगामी माह में प्रस्तुत, - सम्पादक।

एक छोटी सी बात पर जिधर सर उठाओ हर कोई अपने विद्वता के तर्क को जबरन थोपने लगता है। इनसे कोई गुढ़ रहस्य आ टकराये तो कुतकों की एक फेहरिश्त सामने आ खड़ी होती है। आज वेद, उपनिषद, पुराण, जैसे ग्रन्थ जहाँ देखने को मिल जाते हैं वहाँ एक तृप्तिका अनुभव होता है। आप किसी के सलेक्शन को ही देखिये उसमें अन्य साहित्य के साथ निगेटिव साहित्य मिल जायेंगे पर हमारे स्तम्भ नहीं मिलेंगे। फिर निगेटिव साहित्य वाले जब ईश्वर की सत्ता और वेद पर प्रश्न उठाते हैं तो सहज ही इन पर दया आने लगती है और अपने वैदिक शिक्षा पर गर्व होने लगता है। ईश्वर क्या है, इसकी सत्ता कैसी है, इसका जीवन से क्या सम्बन्ध है ये बात सबको उलझा देते हैं।

ईश्वर सत्य है, सर्वोच्च शक्ति है। पूजा, प्रार्थना, ध्यान और आरती आदि सब उसी के लिये हैं। ईश्वर एक है जिसे ब्रह्म, परमेश्वर या परमात्मा कहा जाता है। यह अप्रकट है अजन्मा है। ईश्वर के प्रति आस्था रखना उसपर पूर्ण विश्वास रखना ही उसकी पूजा है। अन्य किसी में अपना आस्था को रखना भटकाव की स्थिति पैदा करता है। चाहे सुःख हो, दुःख हो ईश्वर के प्रति आस्था को कभी डगमगाने न दें। यदि ईश्वर में आपकी आस्था जग गयी तो इस आशा के अन्दर इन्द्रियों एकजुटता की ओर केन्द्रित होती जायेंगी। इनके अन्दर आस्था अपना स्वरूप बदलती है वे लोग अन्दर से लड़खड़ाने लगते हैं। सनातन धर्म कुछ नियमों में बँधा हुआ है जिसके लाभ ही लाभ हैं। अत्यन्त सकून इस नियम का पहला वरदान है। प्रतिदिन शाम को सन्ध्या बन्दन से निगेटिव विचारों से मुक्ति मिल जाती



है। उपवास के वैज्ञानिक लाभ तो हैं पर इसका आध्यात्मिक लाभ है मन को शान्ति प्रदान करना। आत्मा को शान्ति मोक्ष की ओर और मन की शान्ति विश्व शान्ति और सामंजस्य की ओर ले जाता है। तीर्थ यात्रा पुण्यदायी, फलदायी, होता है। तीर्थ से वैराग्य और सौभाग्य दोनों प्राप्त होते हैं। जीवन का सार तत्व समझ में आने लगता है। इतना ही महत्व दान का है जो वेद के अनुसार उत्तम, मध्यम और निकृष्ट तीन प्रकार के माने जाते हैं। विद्या दान उत्तम, कीर्ति और स्वार्थ के लिये दान मध्यम और भीख, भौँड और धर्म टैक्स के रूप में दान निकृष्ट माना जाता है।





सौलहवाँ पुष्प

विलक्षण मन्दिरों की तलाश

कटारमल का सूर्य मन्दिर

मोनिका त्यागी राणा, लखनऊ

यह मन्दिर अल्मोड़ा से 16 किमी दूर पड़ता है। यह उड़ीसा के कोणार्क सूर्य मन्दिर के बाद सूर्य भगवान को समर्पित देश का दूसरा सबसे बड़ा सूर्य मन्दिर है। मन्दिर का परिसर 800 साल पुराना है और मुख्य मन्दिर 45 छोटे-छोटे मन्दिरों के घिरा हुआ है। मन्दिर अपने आप में वास्तुकला का एक अद्भुत नमूना है। इसके दीवालों पर की गयी नक्काशी बहुत ही जटिल है। यद्यपि ये प्राचीन तीर्थ स्थल एक खण्डहर के रूप में बदल गया है फिर भी यह अपनी ओर अत्यधिक आकर्षित करता है। पुराने रिकार्डों से पता चलता है कि यह मन्दिर 9 वीं शताब्दी में कल्युरी राजा कटारमल ने बनवाया था। भारतीय पुरातत्व विभाग द्वारा इस मन्दिर को संरक्षित स्मारक घोषित किया जा चुका है। इस मन्दिर का निर्माण ऐसे कराया गया है कि सूर्य की पहली किरण इस मन्दिर में रखे शिवलिंग पर पड़ती है। मन्दिर की दीवारें पत्थर की बनी हुयी हैं और इसके खम्भे पर बहुत ही खूबसूरत नक्काशी की गयी है।





सतरहवाँ पृष्ठ

कसार देवी का मन्दिर

मोनिका त्यागी राणा, लखनऊ

भारतीय पर्यटक विदेश जाते हैं नये प्रकार के अद्भुत प्राकृतिक कला को देखने और सुनने पर हमारे भारत में आज भी ऐसे कई अद्भुत स्थल हैं जो आपकी नजरों से दूर हैं, उन स्थलों को आपतक लाने का प्रयास कर रहीं हैं, सम्पदा की सशक्त लेखिका मोनिका त्यागी राणा - सम्पादक।

इस कड़ी में एक दिव्य मन्दिर है, कसार देवी का मन्दिर। इस मन्दिर के बारे में ऐसी किंवदन्ती है कि इस मन्दिर की रचना स्वयं किसी देवी शक्ति ने की है या फिर प्रकृति के चमत्कारों ने इसे निर्मित किया है। कुछ लोगों का कहना है कि यहाँ साक्षात् देवी माँ प्रकट हुई थीं। भारत में स्थित यह स्थल दुनिया का तीसरा वह स्थान है जहाँ खास प्रकार की चुम्बकीय शक्तियाँ मौजूद हैं। इस सन्दर्भ मनासा के वैज्ञानिकों की भी टीम यहाँ अपना शोध का कार्य सम्पादित कर चुके हैं और इस शक्तियों पर अपनी मौन स्वीकृति दे चुके हैं और शक्तियों को अनुभव कर हैरान हो चुके हैं। कसार देवी का मन्दिर कसार पर्वत पर स्थित है। पर्यावरणविद् डा बजय रावत यह मानते हैं कि इस पूरे क्षेत्र में आस पास का पूरा ईलाका से जुड़े भूगर्भ के भीतर कोई विशाल भू चुम्बकत्व की शक्ति केंद्रित है। पर इस पर आज तक कोई ठोस कार्य नहीं हो पाया। इस मन्दिर के लिये विलक्षण बात ये है कि आज य लगभग तीन हजार वर्ष पूर्व शुभ और निशुभ नामक दैत्यों के संहार के लिये माँ कात्यायनी के रूप में यहीं प्रकट हुयी थीं तबसे ये स्थान विशेष रूप से सिद्ध स्थल बन गया है। यह स्थान पूजा, तपस्या के लिये विशेष रूप से जाना जाता है। स्वामी विवेकानन्द इस स्थान पर जब आये तो वो भी ध्यान में लीन हो गये थे। इस स्थान को धर्मिक पर्यटक और ध्यान केन्द्रित करने वाले स्थल के रूप में और अधिक विकसित किया जा सकता है लेकिन यहाँ सुविधाओं का अभाव है यदि सरकार इसपर ध्यान दे तो निश्चय ही इस देश की प्रतिष्ठा के साथ-साथ जन कल्याण का भी कार्य होगा।





आदरहावों पुष्प

गोलू देवता का अद्भुत मन्दिर

मानिका त्यागी राणा, लखनऊ

कहानी है। गोलू को न्याय का देवता अल्मोड़ा के पास चितई में कामना पूर्ति मन्दिर के गोलू देवता की अपनी एक दिलचश्प माना जाता है। ये माना जाता है कि कल्युरी वंश के राजा की सात रानियाँ थीं परन्तु इतनी रानियाँ होने के बाद भी राजा को कोई सन्तान नहीं थी। इस बात को लेकर राजा हमेशा परेशान रहते थे। एक दिन राजा जंगल में शिकार खेलने गये। राजा की मुलाकात रानी कलिंका से हुयी। कलिंका को देवी का अंश माना जाता था। राजा ने उनको देखा और उनसे प्रेम हो गया। राजा ने उनसे विवाह कर लिया। कुछ समय बाद रानी कलिंका ने एक बच्चे को जन्म दिया परन्तु सातों रानियाँ में इसके प्रति ईर्ष्या होने के कारण दाई से मिलकर बच्चे की जगह एक पत्थर को रख दिया और बच्चे को एक छोकरी में रखकर नदी में बहा दिया। बहता हुआ यह बालक मछुवारों के पास आ गया। उन्होंने ही उसे पाल पोश कर बड़ा किया। जब बालक सात-आठ वर्ष का हुआ तो उसने चंपावत जो कल्युरी वंश के राजा झल राय की राजधानी थी वहाँ जाने की जिद की। जब पिता ने पूछा कि इतनी दूर कैसे जावोगे तो उसने एक धोड़ा माँगा। पिताजी ने मजाक समझ कर एक लकड़ी का धोड़ा बालक गोलू को लाकर दिया। गोलू में ईश्वर के स्वरूप थे, उसी धोड़े में जान डालकर चंपावत पहुँच गये। वहीं एक स्थान पर तालाब में राजा की सातों रानियाँ स्नान कर रहीं थीं। बालक गोलू वहीं धोड़े को पानी पिलाने लगा। सभी रानियाँ हँसती हुई बोली, हे मूर्ख बालक, क्या लकड़ी का धोड़ा कहीं पानी पीता है। उस पर उस बालक ने तत्काल उत्तर दिया कि जब रानी कलिंका बालक के जगह एक पत्थर को जन्म दे सकती हैं तो लकड़ी का धोड़ा पानी क्यों नहीं पी सकता है। ये सुनकर सातों रानियाँ चकित हो गईं, क्योंकि उनके सिवा ये बात कोई नहीं जानता था। शीघ्र ही ये बात पूरे राज्य में फैल गयी। राजा को भी सारी सच्चाई का पता चल गया और उन्होंने सातों रानियों को दण्ड दिया तथा गोलू को अपना वारिस घोषित कर दिया। कुमार्यू में उन्हें न्याय का देवता कहा जाने लगा। उनके न्याय के चर्चे हर ओर फैलने लगे। आज भी जब किसी के साथ अन्याय होता है तो वह एक पत्र लिखकर उनके मन्दिर में टॉग देता है और उसे निश्चय ही न्याय प्राप्त होता है इसीलिये लोग इन्हे कामना पूर्ति भी कहते हैं।

*





उच्चीयादर्श पुस्तक

1965 पाक युद्ध की एक दबी कहानी सेंट पाल चर्च।

युद्ध के दौरान कवच बन गया था।

सेंटपाल चर्च पर गिराये गये पाकिस्तान द्वारा बम
इस चर्च में एक साथ 1500 लोग प्रार्थना कर सकते थे।

मोनिका त्यागी राणा, लखनऊ

अंबाला 21 सितम्बर 1965 को पाकिस्तानी बमबर्शक विमानों ने छावनी में स्थित एयरफोर्स स्टेशन को निषाने पर लिया था। सेंटपाल चर्च पर बम भी गिराये गये थे। हालांकि आज चर्च का केवल क्षति ग्रस्त ढाँचा ही बचा है फिर भी ये अपनी भव्य अतीत की कहानी को आज भी बयाँ करता है। अपने समय में उत्तर भारत की सबसे खूबसूरत और बड़े माने जाने वाले गौथिक शैली के इस चर्च में एक साथ 1500 लोग प्रार्थना कर सकते थे। वर्ष 1965 में क्षतिग्रस्त होने के बाद पादरी के घर को चर्च के रूप में इस्तेमाल किया जाने लगा। चर्च का लकड़ी का मॉडल जो शुरूवात में तैयार किया गया था। वह आज भी मौजूद है। आज भी वो घण्टा मौजूद है जो प्रार्थना के समय और आपातकाल की स्थिति में अनुनायियों को एकत्र करने के लिये प्रयोग किया जाता था। 1843 में अम्बाला में जब कैंटोनमेण्ट बसा तो डायसिस आफ लाहौर के बिषप ने 1843 में चर्च आफ इंग्लैण्ड के नाम से 24 एकड़ जमीन खरीदी थी, उस वक्त अंग्रेजों द्वारा अम्बाला में कैंटोनमेण्ट को बसाया जा रहा था। इसी दौरान 14 जनवरी 1952 में चर्च का निर्माण शुरू किया गया था जो कि 4 जनवरी 1957 को बनकर तैयार हुआ था।

सेंटपाल चर्च का निर्माण आकिटेक्ट कैप्टन एटिक्शन के देख रेख में किया गया था। यह फौजियों का चर्च था जिसे विशेषकर फौजी अफसरों के प्रार्थना के लिये ही बनाया गया था। देश के बटवारे से पहले यह चर्च डायसिस आफ लाहौर के अधीन था लेकिन बाद में डायसिस आफ अमृतसर के अधीन हो गया। अब इस चर्च के प्रांगण में ही एयरफोर्स स्कूल भी चल रहा है।





इस चर्च के प्रति ईसाई धर्म के लोगों में अपार आस्था है। इसमें महारानी विकटोरिया की बरसी भी मनायी जाती है। अक्सर ब्रिटेन से यहाँ अंग्रेज अपनी पुरुखों को श्रद्धांजलि देने पहुँचते हैं। यह चर्च अपने आप में शिल्प शैली व इतिहास की दृष्टि से एक बेजोड़ धरोहर है। इस चर्च के संरक्षण के लिये सरकार का ध्यान आकृष्ट करना आवश्यक है। इस ऐतिहासिक धरोहर को गम्भीरता पूर्वक संजो कर रखने की ज़रूरत है। इसके सम्मान को अपने रूप में प्रतिस्थापित करने के लिये 12 करोड़ रुपये की आवश्यकता पड़ेगी। इस धरोहर को यदि सरकार अपने संज्ञान में ले ले तो एक इतिहास सुरक्षित हो जायेगा और संसार इस इतिहास से रुबरु हो जायेगा।



बीसवाँ पुष्प

मौत भी अच्छी है लम्बे इन्तजार से

मोनिका त्यागी राणा, लखनऊ

मौत भी अच्छी है लम्बे इन्तजार से,
नफरत है बहुत अच्छी झूठे प्यार से।
दोस्तों का हक अदा करते रहे हम,
और लज्जत भी गयी है यार से।

हम यकीन करते रहे हैं हर किसी पर,
क्या मिला है इश्क के ऐतबार से।
दिल में खुश थे हम छुपे इस इश्क से,
खो दिया सब प्यार के इकरार से।

वक्त भरता जख्म हरदम हर किसी का,
भर न पाया जख्म मेरा वक्त ही के मार से।
हम सितम सहते रहे, बस आखिरी है जानकर,
दोस्ती सी हो गयी है अब तेरे हर जुल्म से।

आखिरी पल में भी ख्वाहिश एक बाकी रह गयी,
मरते-मरते भी मुहब्बत हो गयी इक जिन्दगी से।



छवचीरावों पुष्प

सनातन कथा विमर्श

पाण्डवों का स्वर्गारोहण : महाभारत कथा का कलाईमैक्स

-सनातन धर्म में स्वर्ग - नर्क की परिकल्पना हकीकत।

-कर्मों के अनुसार मनुश्य अपने सद्गति को प्राप्त करता है।

मोनिका त्यागी राणा, लखनऊ

महाभारत की घटना अपने आप में हैरान कर देने वाली एक अद्भुत घटना है। कौरव और पाण्डवों के बीच हुयी महाभारत रूपी इस भयंकर युद्ध के लिये बहुत से लोग द्रोपदी को दोष देते हैं तो कुछ लोग कौरवों के अहंकार और लालच को इस युद्ध का कारण मानते हैं। कुछ लोगों का कहना है कि शकुनि के कारण महाभारत के इस युद्ध के पृष्ठभूमि का निर्माण हुआ। इस भयंकर युद्ध में लाखों की संख्या में जानें गयीं और साथ ही लगभग कुरुवंश का विनाश भी हो गया। कहा जाता है कि कुरुक्षेत्र में हुए इस युद्ध में इतने लोगों की जानें गयीं, इतना खून बहा कि यहाँ की मिट्टी का रंग आज भी लाल है। महाभारत युद्ध के समय क्या हुआ ये तो सभी को मालूम है लेकिन महाभारत के युद्ध की समाप्ति के बाद क्या हुआ, पाण्डवों के विजय के विजय के बाद हालात क्या रहे, हस्तिनापुर के शासन का क्या हुआ, इस बात का जिक्र कम ही मर्मज्ञ करते हैं। हमारा ये सन्दर्भ कौरवों के अन्त और श्री कृष्ण की मृत्यु के बाद पाण्डवों के शासन का क्या हुआ, इसी तथ्य पर केन्द्रित है। श्रीकृष्ण की मृत्यु के बाद पाण्डवों का भी भौतिक जीवन से मोह उठ गया। उन्हें न तो हस्तिनापुर का शासन ही सन्तोष दे पा रहा था न ही युद्ध में प्राप्त जीत की खुशी। ऐसी स्थिति में उन्होंने मोक्ष के मार्ग को चुना और इसकी तलाश में सारा राजपाठ त्याग दिया। परीक्षित को शासन की बागड़ोर सौपकर वे सभी द्रोपदी के साथ हिमालय की ओर निकल गये। एक काला कुत्ता भी इनके साथ इस यात्रा पर निकल गया। सर्व प्रथम पाण्डव दक्षिण की ओर गये जहाँ एक नदी के किनारे अग्निदेव प्रकट हुए। अग्निदेव ने अर्जुन से अपना धनुष सौंप देने को कहा क्योंकि जिस उद्देश्य से धनुष सौंपा गया था वह उद्देश्य अब पूर्ण हो गया था। अर्जुन ने अपना धनुष अग्नि देव को सौंप दिया। उसके बाद वे सभी दक्षिण पश्चिम दिशा में गये, जहाँ उन्हें पानी में ढूबी बारिका नगरी दिखी। यह भयावह स्थिति को देख पाण्डव





अत्यन्त दुखी हो गये। वो ऋषिकेश होते हुये हिमालय की ओर चले गये। हिमालय पार करते ही द्रोपदी ने अपने प्राण त्याग दिये। भीम ने युधिष्ठिर से पूछा कि सभी लोगों में द्रोपदी ने पहले प्राण क्यों छोड़ा? उन्होंने कहा पाँच पतियों की पत्नी होने के बावजूद द्रोपदी अर्जुन को लेकर पक्षपात करती थी। वह अपने सभी पतियों को समान नहीं समझती थी इसलिये वो स्वर्ग की यात्रा पूरी नहीं कर पायी। इसके बाद सहदेव की मौत हुयी। इसका कारण था सहदेव को अपने को सबसे अधिक बुद्धिमान समझना। इसके बाद नकुल ने अपने प्राण त्यागे। इसका कारण था उनके भीतर पनप रहा अपने आकर्षक रूप को लेकर अहंकार। इसके बाद अर्जुन ने अपना देह त्याग दिया। इसका कारण भीम ने जब पूछा तो युधिष्ठिर ने बताया कि अर्जुन को अपने बल और दक्षता पर बेहद अभिमान था इसलिये वह स्वर्ग तक अपनी यात्रा पूरी नहीं कर पाये। अब बच गये थे भीम, युधिष्ठिर और वो काला कुत्ता, लेकिन इस बीच भीम ने भी साथ छोड़ दिया। भीम की मौत का कारण बना उनकी दूसरों की भूख की परवाह किये गये बगैर अत्यधिक भोजन करने की प्रवृत्ति। युधिष्ठिर ने अपने आगे की यात्रा उस कुत्ते के साथ पूरी की। रास्ते में उन्हें इन्द्र देव मिले। उन्होंने उन्हें अपने रथ पर स्वर्ग में चलने को कहा। इस पर युधिष्ठिर ने उत्तर दिया कि वे अपने भाईयों और द्रोपदी के बगैर स्वर्ग नहीं जायेंगे। इस पर इन्द्र देव ने उनसे कहा कि वो सभी उन्हें स्वर्ग में मिलेंगे। युधिष्ठिर एक शर्त पर स्वर्ग में चलने को तैयार हुये कि वह काला कुत्ता भी उनके साथ जायेगा क्योंकि इसने अंत तक युधिष्ठिर का साथ नहीं छोड़ा था। इतना सुनते ही उस काले कुत्ते ने अपना असली रूप धर्मराज का धारण किया। धर्मराज युधिष्ठिर से बहुत अधिक प्रभावित और प्रसन्न हुये और युधिष्ठिर को संदेह इन्द्र के रथ पर बैठकर स्वर्ग की यात्रा पूरी करनी पड़ी। स्वर्ग पहुँचकर युधिष्ठिर ने कौरवों को देखा पर अपने भाई पाण्डवों कही नजर नहीं आये। युधिष्ठिर को पता चला कि उनके सभी भाई इस समय नर्क लोक में हैं। उन्होंने उनके नर्क में होने का कारण पूछा तो इन्द्र देव ने कहा कर्ण ने द्रोपदी के प्रति हुए अपमान में भागीदार था इसलिये उसे नर्क भोगना पड़ा। भीम और अर्जुन ने धोखे से दुर्योधन की हत्या में सहयोगी रहे, नकुल और सहदेव ने भी इसमें साथ दिया इस कारण उन्हें भी नर्क में आना पड़ा। इस बात पर युधिष्ठिर विचलित हो उठे। उन्होंने पूछा जिन लोगों ने पूरी उम्र धर्म का पालन किया। वो नर्क में भेज दिये गया तो कौरवों जैसे अत्याचारियों को स्वर्ग में क्यों रखा गया है! ठस पर देवाधिदेव इन्द्र ने उत्तर दिया कि कौरव अपनी मातृभूमि के लिये अन्त समय तक लड़ते रहे और इसी उद्देश्य के तहत एक क्षत्रिय की भाँति अपने प्राण भी त्याग दिये इसलिये अपने इस उत्तम कर्म के



लिये दुर्योधन और उनके सहयोगियों को कुछ समय के लिये स्वर्ग में रखा गया है। युधिष्ठिर के मुख मण्डल पर उदासी के भाव को देख कर इन्द्र ने उनसे कहा कि पाण्डवों का नर्कवास और कौरवों का स्वर्गवास कुछ ही समय के लिये है। यह उनके कर्मों के कारण उनको दिया गया है। कर्मों के अनुसार स्वर्ग या नर्क भोगकर कौरव नर्क में और द्रोपदी सहित पाण्डव स्वर्ग में चले आयेंगे। मनुष्य अपने कर्मों के अनुसार फल प्राप्त करता हैं और शरीर त्यागने के बाद उसे कर्मों के अनुसार स्वर्ग और नर्क की गति प्राप्त होती है





बाईंसवों पुण्य

पवित्र तीर्थ

**ऋषि दधीचि द्वारा अपनी अस्थियों दान करने का पुण्य स्थल
पावन तीर्थ नैमिशारण्य**

सीतापुर जिले में गोमती नदी के तट पर यह स्थित है नैमिशारण्य वेदव्यास ने यहाँ पर वेदों, शास्त्रों और पुराणों की रचना की थी।

मोनिका त्यागी राणा, लखनऊ

भारत ऋषियों मुनियों की धरती है। भगवान के अधिकतर अवतार भी इसी भारत के पवित्र भूमि पर हुए हैं। भारत की सनातन संस्कृति में नैमिशारण्य को तीर्थ अथवा पावन धाम के नाम से जाना जाता है। इस तीर्थ का वर्णन बहुत सारे धार्मिक ग्रन्थों में भी मिलता है। उत्तर प्रदेश के सीतापुर जिले में गोमती नदी के तट पर यह स्थित है। यह स्थल 88 हजार ऋषियों की तपोस्थली रहा है। जब ब्रह्मा जी ने पृथ्वी के विस्तार का कार्यभार सौंपा, उस समय उन्होंने यहाँ 23 हजार वर्षों तक कठोर तप किया। इसी तपोभूमि पर ही ऋषि दधीचि ने लोक कल्याण को ध्यान में रखते हुये देवराज इन्द्र को अपनी अस्थियों दान की थी। यह संसार का सबसे बड़ा दान माना जाता है। भगवान वेदव्यास ने यहाँ पर वेदों, शास्त्रों और पुराणों की रचना की थी। श्रीरामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदास जी ने इस स्थली का वर्णन करते हुये कहा है- ‘‘तीरथवर नैमिष विख्याता, अति पुनीत साधक सिद्धि दाता।’’ शास्त्रों में बतायी गयी कथा के अनुसार एकबार दैत्यों के भय से दुखी होकर ऋषि गण ब्रह्मा जी के पास गये और कहा, ’’हे सृष्टि रचयिता, धरती पर किसी ऐसी जगह के बारे में बतायें जहाँ हम बिना किसी डर के धर्म कार्य और जप तप कर सकें। उनके इस प्रकार विनय करने पर ब्रह्मा जी ने अपने तप से सूर्य के समान तेजपूर्ण चक्र प्रकट किया और ऋषियों से कहा, ‘‘आप इस चक्र का अनुसरण करें, जहाँ इसकी नेमि (धुरि) भूमिगत होगी, उसी स्थान पर आप सब निवास करें। चक्र की गति बहुत तेज थी और वो एक सरोवर के पास जाकर उसमें लीन हो गया। कुछ ज्ञानियों का कहना है कि महर्षि शौनक के मन में दीर्घ काल व्यापी ज्ञान संकलित करने की इच्छा थी। विष्णु भगवान उनकी आराधना से प्रसन्न होकर उनको एक चक्र दिया था और उनसे यह भी कहा था



कि चक्र को चलाते हुये चले जाइये और जिस स्थान पर इस चक्र की नेमि (धुरि) नीचे गिर जाये तो समझ लेना वह स्थान पवित्र हो गया। महर्षि शैनक वहाँ से चक्र को चलाते हुए निकल पड़े और उनके साथ अठ्ठासी हजार सहस्र ऋषि भी चल पड़े। अचानक गोमती नदी के किनारे चक्र की नेमि गिर गयी और वहाँ चक्र भूमि में प्रवेश कर गया। माना जाता है कि यहाँ पर पाताल लोक के अक्षय जल श्रोत से जल आता है।

नैमिशारण्य के प्रमुख आकर्षक केन्द्र हैं- चक्र तीर्थ, भूतेश्वर नाथ मन्दिर, व्यास गढ़ी, हवन कुण्ड, ललिता देवी का मन्दिर, पंच प्रयाग, शेष मन्दिर, क्षेमकाया मन्दिर, हनुमान गढ़ी, शिवाला-मैरो जी मन्दिर, पंच पाण्डव मन्दिर, नारदानन्द सरस्वती आश्रम-देवपुरी मन्दिर, रामानुज कोट, अहोविल मठ और परमहंस गौड़ीय मठ।





तेझ्झसवाँ पुऱ्य

गजल (खलिश)

मोनिका त्यागी राणा, लखनऊ

उसकी मजबूरियाँ भी कुछ न कुछ रही होगी,
वरना आँखों से उनके अश्क भी बहे होंगे।
कहनी जो चाही उसने अपने हाले दिल की बात,
सच बोलने के हौसले न आये होंगे।

खुद को भी एक बार तहे दिल से देखना,
ये दिल का फासले भी बेवजह नहीं होंगे।
कोई और मेरे पास हो उसके सिवा, नहीं,
बस मेरी तमन्नाओं का उसे अहसास न होंगे।

कमजोर नहीं हूँ जो मांगूँ प्यार की मैं भीख,
पर ये भी कैसे कह दूँ उससे प्यार न होंगे।
अमानत है किसी और की, डरते हैं कहने से,
तूँ एक है, बस नेक है, हम गैर न होंगे।

उठने लगेंगे प्रश्न, मेरे साथ गर चले,
खुद से भी ज्यादा फिक्र मेरी जाने जिगर होंगे।
राहों में मेरी शूल को जिसने भी सजाया है,
हाथों में उसके जख्म भी यादों को लिये होंगे।

मेरे घर को रोशन, जिन चिरागों ने है किया,
कभी कुछ और के घर में भी ये जलें होंगे।

उसकी मजबूरियाँ भी कुछ न कुछ रही होगी, वरना आँखों से उनके अश्क भी बहे होंगे। *



चौबीसवाँ पुष्प

कौल कोन्डली माता का मंदिर (नगरकोटा जम्मू)

मोनिका त्यागी राणा, लखनऊ

कौल कोन्डली मंदिर नगरकोटा शहर जम्मू कश्मीर में स्थित है यह मंदिर जम्मू शहर से 14 किलो मीटर की दूरी पर स्थित है। यह मंदिर माता वैष्णो देवी को समर्पित है। माना जाता है कि अगर माता वैष्णो देवी कि यात्रा से पहले इस मंदिर से यात्रा आरम्भ करनी चाहिए। इस मंदिर में माता एक पिण्डी के रूप में स्थापित है। यह मंदिर जिस नगर में है यह नगर पहले नागराज के नाम से जाना जाता था और 13 केस में बसा हुआ है।

पौराणिक कथाओं के अनुसार द्वापर युग में वैष्णो माँ यहाँ पर 5 वर्ष की आयु में कन्या के रूप में प्रकट हुई। माँ वैष्णो ने इस स्थान पर 12 वर्ष की तपस्या वाले स्थान पर ही पिण्डी रूप धारण किया। इस मंदिर में माँ स्वयं प्राकृतिक पिण्डी रूप में भक्तों को दर्शन देकर उनकी मनोकामनाओं को पूर्ण करती है। माता रानी ने इसी जगह पर कोन्डली महामाया महाशक्ति ने स्थानीय कन्याओं के रूप में लौड़ियाँ खेली थी। नगरकोटा पहले ये नगर नागराज के नाम से विख्यात था। पौराणिक कथाओं के अनुसार द्वापर युग में वैष्णो माँ यहाँ पर 5 वर्ष की आयु में कन्या के रूप में प्रकट हुई। माँ ने यहाँ पर वर्ष तक तपस्या की थी और तपस्या वाले स्थान पर ही पिण्डी रूप धारण किया। अपने पिण्डी रूप में भक्तों को दर्शन देकर उनकी मनोकामनाओं को पूर्ण करती है। 12 साल कि तपस्या के दौरान माता ने विश्व गति हेतु हवन यज्ञ और भण्डारे किये। महामाया शक्ति ने देवताओं को चाँदी का कौल प्रदान करके कौल के अन्दर 36 प्रकार का भाँगन देवताओं को करवाया था। माता जी ने चाँदी के कौल को जमीन पर हिलाया तो जमीन से पानी निकल आया और सबको हिलाया उसी स्थान पर माँ के सिक्को ने कुआँ बनाया और इन कुएँ का नाम माता जी का कुआँ रखा। जब पांडवों का वनवास हुआ था तो पांडवों और उनकी माता कुन्ती को मालूम हुआ की नागराज गाँव में माँ निवास करती हैं और अपने भक्तों की मनोकामना पूरी करती हैं। तब माता कुन्ती पांडवों के साथ यहाँ आयी। माता कुन्ती ने माता रानी से मन्त्र मांगी कि माता रानी मेरे पुत्रों का वनवास जल्दी खत्म हो जाये और उनका राज पाठ वापस मिल जाये। तब महामाया ने कहा माता कुन्ती से कि पहले मेरा भवन बनाओ। तब पांडवों ने माता जी का ये भवन एक रात में बनाया था। वो रात 6 माह की हुई



इस मंदिर के परिसर में अण्डेश्वरी ज्योतिलिंग का भी मंदिर है ऐसा कहा जाता है कि जब पांडव माता रानी का भवन बना रहे थे तब भीम ने बोला कि हे माँ मुझे प्यास लगी है। तब महाशक्ति ने कहा कि बेटा यहाँ पानी कि व्यवस्था नहीं हैं तब महामाया भवन के पीछे गयी और चाँदी का कौल (कटोरी) प्रकट किया और कौल में धीसा तो वहाँ पर अण्डेश्वरी ज्योतिलिंग प्रकट हुए तब महाशक्ति ने कहा जहाँ शिव होंगे वहा शक्ति होगी दोनों ही एक दूसरे के बिना अधूरे हैं।

मंदिर के परिसर में बना माता जी का कुआँ है कहा जाता है कि इस कुएँ का जल पीने से मन को शान्ति मिलती है। इस कुएँ के जल को शरीर पर छीड़कने से शरीर शुद्ध होता है। इस मंदिर में सभी त्योहार मनाये जाते हैं। मंदिर का अध्यात्मिक वातावरण श्राद्धुओं के दिल और दिमाग को शान्ति प्रदान करता है।

मंदिर में एक वृक्ष भी है जिसको अक्षय वट कहा जाता है। पंडित श्रीघर ने इसी वट वृक्ष के नीचे कई वर्षों तक कठीन पत किया था। माता वैष्णो ने 5 वर्ष की कन्या के रूप में प्रकट होकर श्रीघर का भण्डारा करवाने को कहा था और श्रीघर गरीब होने के कारण मना करते रहे तब माता ने वही समय था जब चाँदी का कटोरा प्रकट करके सबको भोजन करवाया था सभी देवताओं और गाँव वालों को। इसी कारण इस जगह को कौल कौन्डली के नाम से जाना जाता है। इसी वृक्ष के नीचे माता रानी ने 12 वर्षों तक तपस्या की थी जो भक्त दर्शन के लिये माँ उनके साथ इसी वृक्ष पर झूला झूलती थी इसीलिये आज भी लोग मनोकामना पूरी करने के लिये यहाँ झूला बांधते हैं।





पच्चीसवाँ पुष्प

(त्रिपुरामालिनि माता) देवी का मंदिर (जालंधर)

मोनिका त्यागी राणा, लखनऊ

देवी माँ दुर्गा के स्वरूपों में कई रूपों के विषय में हम बात कर चुके हैं, उनके कई शक्ति पीठों के विषय में हम आपको जानकारी दे चुके हैं। आज हम जालंधर के देवी तालाब मंदिर, जो देवी दुर्गा को समर्पित है उसके बारे में बताना चाहेंगे।

ऐसा माना जाता है कि यह लगभग 200 वर्ष पुराना मंदिर है। माता त्रिपुरामालिनि मंदिर इस मंदिर के परिसर में स्थित है और भारत के 51 शक्ति पीठों में से एक है।

इस दिव्य स्थान का इतिहास माता सती से जुड़ा हुआ है अपने पिता दक्ष को द्वारा अपने पति भगवान शिव का अपमान किए जाने पर इन्होंने आत्मदाह किया था और कहा जाता है कि माता सती के आत्मदाह का समाचार सुनकर उनके पति भगवान शिव ने क्रोध में अपनी तीसरी आँख खोल दी थी और माता सती के मृत शरीर को लेकर ब्रह्माण्ड में घूमते हुये तांडव नृत्य करने लगे थे।

भगवान के इस क्रोध के डर से और ब्रह्माण्ड को बचाने के लिये भगवान विष्णु ने अपना 'सुदर्शन' चक्र भेजा। उस सुदर्शन चक्र द्वारा माँ सती का शरीर टुकड़ों में कट गया और पृथ्वी पर बिखर गया। पृथ्वी के जिन हिस्सों में माता सती के शरीर के टुकड़े गिरे वह स्थान धन्य हो गया वही पर षक्ति पीठों का निर्माण हुआ और वहाँ माता सती के मन्दिरों का निर्माण किया गया। माता त्रिपुरामालिनि मंदिर उस स्थान को दर्शाता है जिस स्थान पर माता सती का दांया स्तन प्राप्त हुआ था।

मंदिर की पुरानी संरचना को पुनर्निर्मित किया गया है और इसके पुराने ढांचे में कई तरह के बदलाव किये गये हैं। मंदिर परिसर में कुछ अन्य सरचनाओं का निर्माण किया गया है। पर विशाल तालाब हैं और यही कारण भी है कि इस मंदिर को देवी तालाब मंदिर के आलावा देवी काली को समर्पित एक मंदिर भी है। हाल ही में अमरनाथ और वैष्णो गुफा मंदिर जैसी संरचनाएँ का निर्माण मंदिर परिसर में किया गया है। गुफा के प्रारम्भ होने से पहले एक विशाल बजरंग बली की मूर्ति भी स्थापित की गयी है जो बहुत ही आकर्षक लगती है। आस्था और भक्ति के आलावा यहाँ उत्सव मनाने के लिये भी आगंतुक मंदिर में आते हैं। इस मंदिर के वार्षिक हरिबल्लभ संगीत सम्मेलन का आनंद लेने के लिये लोग बहुत दूर से आते हैं। मन्दिर में भक्तों के लिये रहने के लिये हर सुविधा उपलब्ध करायी गयी है।

*



छवीसाठों पुष्प

कर्ण झील कर्ण नगरी करनाल से

मोनिका त्यागी राणा, लखनऊ

करनाल शहर का नाम कर्ण के नाम पर ही रखा गया। कर्ण झील भी करनाल शहर से कुछ ही दूरी पर है। कर्ण इसी झील में नहाया करते थे। जिसे आज कर्ण झील कहा जाता है।

कर्ण महाभारत के एक महत्वपूर्ण योद्धा थे। दुर्वासा ऋशि के वरदान से कुन्ती ने सूर्य का आह्वान करके कौमार्य में ही कर्ण को जन्म दिया था। लोक लाज के भय से कुन्ती ने उन्हे नदी में बहा दिया था। गंगा किनारे हस्तिनापुर के सारथी अधिरथ को कर्ण मिले और वे उस बालक को अपने घर ले गये। कर्ण को अधिरथ की पत्नी राधा ने पाला इसलिए कर्ण को राधेय भी कहते हैं।

कुन्ती-सूर्य पुत्र कर्ण को महाभारत का एक महत्वपूर्ण योद्धा माना जाता है। कर्ण के धर्म पिता तो पाण्डु थे लेकिन पालक पिता अधिरथ और पालक माता राधा थीं। कर्ण दानवीर के रूप में प्रसिद्ध थे। वो इतने बड़े दानवीर थे कि अपने कवच कुण्डल दान में दे दिये थे और अंतिम समय में सोने का दांत भी दे दिया था। कर्ण की शक्ति अर्जुन और दुर्योधन से कम नहीं थी। उसके पास इन्द्र द्वारा दिया गया अमोघा था। आज मैं अपने इस लेख में आपको अवगत कराने जा रही हूँ कर्ण के जन्मस्थान करनाल की। करनाल का शुमार हरियाणा के प्रमुख शहरों में है, ऐसा माना जाता है कि यह शहर राजा कर्ण द्वारा स्थापित किया गया था। माना जाता है जब राजकुमारी के लिए आयोजित तीरअंदाजी प्रतियोगिता में कर्ण ने अर्जुन को चुनौती दी थी तो अर्जुन ने ये कहते हुए उसकी चुनौती अस्वीकार कर दी, कि ना तो कही के राजा हो, ना ही राजकुमार। तब दुर्योधन ने सबके सामने कर्ण का तिलक कर के उसे अंगदेश का राजा घोषित किया और उसे अंगराज कर्ण कहकर पुकारा।

कर्ण बहुत बड़े दानवीर थे। उनके पास से कोई भी खाली हाथ नहीं जाता था। करनाल शहर का नाम कर्ण के नाम पर ही रखा गया। कर्ण झील भी करनाल शहर से कुछ ही दूरी पर है।

शास्त्रों के अनुसार प्रसिद्ध योद्धा कर्ण उन दिनों इसी झील में नहाया करते थे। जिसे आज कर्ण ताल या कर्ण झील कहा जाता है। इसी झील में कर्ण ने नहाने के बाद अपना प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण



सुरक्षात्मक कवच भगवान इन्द्र को दान कर दिया था।

महाभारत युद्ध के समय भगवान कृष्ण यह भली-भाँति जानते थे कि जबतक कर्ण के पास उसका कवच और कुण्डल है, तब तक उसे कोई नहीं मार सकता। ऐसे में अर्जुन की सुरक्षा सम्भव नहीं। महाराज पाण्डु पत्नी कुन्ती ने मुनि दुर्वासा के वरदान द्वारा धर्मराज, वायुदेव तथा इन्द्र का आह्वान कर तीन पुत्र मांगे थे। इन्द्र द्वारा ही अर्जुन का जन्म हुआ। भगवान कृष्ण और देवराज इन्द्र दोनों जानते थे कि जबतक कर्ण के पास पैदायशी कवच और कुण्डल हैं, वह युद्ध में अजेय रहेगा। दोनों ने मिलकर योजना बनाई और इन्द्र एक विप्र के वेश में कर्ण के पास पहुँचे। उस समय कर्ण इसी झील में स्नान कर रहे थे। इन्द्र विप्र के वेश में दान मांगने लगे। कर्ण ने कहा जो मांगना है मांगो। विप्र बने इन्द्र ने कहा पहले आप वचन दें कि मैं जो मांगूँगा आप दोगे। कर्ण ने तैश में आकर इसी झील का जल हाथ में लेकर वचन दे दिया। तब इन्द्र ने उनके कवच और कुण्डल दान में मांग लिये। दानवीर कर्ण ने बिना एक क्षण भी गँवाए अपने कवच और कुण्डल दान में उनको दे दिये।

इसी कारण इस झील का नाम कर्ण झील पड़ा।

आज यह झील करनाल का पर्यटन स्थल है। इसको आधुनिक सूप दिया गया है। यहाँ लोग दूर-दूर से घूमने आते हैं। इसमें बोटिंग की व्यवस्था भी की गयी है। इसके आस-पास का माहौल हरियाली से भरा हुआ है।





सत्ताईशां पुण्य

मजदूर या मजबूर

मोनिका त्यागी राणा, लखनऊ

ए इन्सान तेरी फितरत कभी बदलेगी नहीं
 किसी की मजबूरी का फायदा उठाना तुझे खूब आता है।
 सबक देने को तुझे ऊपर वाले ने हर तरीका आजमाया
 उस तरीके से बचने का अन्दाज तुझे खूब आता है।

कोई मजबूर है काई लाचार है तो कोई बीमार है
 और कोई इन्हीं से कमाई दौलत पर बढ़ा इतराता है।
 कहीं कोई कोशिश कर रहा है कि कोई भूखा न सोये
 और कोई बचे हूए खाने को कूड़े में फेक आता है।

तेरे बनाये बन्दों में इतना फर्क क्यूँ है ऊपर वाले
 कोई खुद के लिये जीता है तो औरें के लिये रोता है।
 जिन सड़कों को बनाया उन्होंने खून पसीने से
 खुद को नहीं मालूम उन्हें कि रास्ता किधर को जाता है।

एक एक ईट जोड़कर बनाये महल चौबारे उन्होंने जिनके
 आज उनको ही उनको दर्द समझ नहीं आता है।
 आज कोई सरकार किसी के काम नहीं आयी यारों
 इन्हीं को तपती धूप में तू वोट डालने जाता है।





आद्लाईलवॉर्स पुस्तक

देव माता गाय

मोनिका त्यागी राणा, लखनऊ

जाना जाता है, कि जो मनुष्य प्रातः स्नान करके गौ स्पर्श करता है, वह पापों से मुक्त हो जाता है।

आज एक अहम् मुद्रा है, “गौ माता की हत्या।” इनके सुरक्षा हेतु आवाजें तो बहुत उठीं लेकिन गौ हत्या रुकी नहीं। मैं आज आपको कुछ बातों से अवगत कराना चाहती हूँ ताकि आप जान सकें कि भारतीय नस्ल की गाय का क्या महत्व है और इसका हमारे जीवन में क्या स्थान है।

भारतीय नस्ल की गायों की कीमत बाहर के देशों में बहुत अधिक है। भारतीय नस्ल की गाय विश्व में सबसे सर्वोत्तम मानी जाती है। पुराणों में और आयुर्वेद में गाय के दूध के जो गुण वर्णित हैं, उनका सम्बन्ध कामधेनु कहलाने वाली भारतीय नस्ल की गाय से है। मॉ के दूध के बाद सबसे अधिक लाभदायक और रोगों से लड़ने की शक्ति देने वाला, दैवी संस्कारों से युक्त तथा कैरोटीन युक्त सर्वोत्तम दूध सिर्फ भारतीय नस्ल की ही गाय देती है।

आज भारतीय नस्ल की गाय सबसे ज्यादा ब्राजील में निर्यात होती है। हमें देशी गाय के महत्व को समझना होगा और सरकार का ध्यान भी इस ओर देना होगा। वैदिक काल में गाय को सर्वोच्च उत्पत्ति का पर्याय माना गया है। गाय भूमि, गाय देवमाता, गाय मेघ, गाय प्राकृतिक जीवन जल मानी गयी है। गाय या गोवंश पुरातन काल में विषेश सम्मानित मानी गयी और इसके मुकाबले में और किसी प्राणी को स्थान नहीं दिया जाता था। देसी गाय की धी को रसायन कहा गया है जो जवानी को कायम रखते हुए बुढ़ापे को दूर करता है। गाय के दूध में स्वर्ण क्षार पाये जाते हैं। जिसने अद्भूत औषधीय गुण होते हैं, जो की गाय के धी के अलावा अन्य किसी धी में नहीं मिलते। गाय के धी में वैक्सीन एसिड ब्यूट्रिक एसिड, बीटा कैरोटीन जैसे पदार्थों से कैंसर जैसी बीमारियों से बचा जा सकता है। यदि आप गाय के 10 ग्राम धी से हवन करते हैं तो इसके परिणाम स्वरूप वातावरण में लगभग 1 टन ताजा आक्सीजन का उत्पाद कर सकते हैं। वास्तु धार्म के अनुसार भी गौ माता हमारे लिये लाभकारी हैं।





प्रकार की अगर एलर्जी है तो खत्म होती हैं।

मांसाहारी व्यक्ति को गौ मूत्र नहीं लेना चाहिए। गौ मूत्र लेने के 15 दिन पहले मांसाहारी का त्याग कर देना चाहिए। लड़कियों का कम उम्र में वयस्क हो जाना स्तन कैंसर की शिकायतों का बढ़ना, बच्चों की औंखों का कमजोर होना, दिमाग में किसी प्रकार की खराबी होना इसका कारण बजारू दुध होता हैं। गाय का जीवन हमारे स्वास्थ्य, प्राकृतिक पर्यावरण, संतुलन, कृषि उर्जा सभी क्षेत्रों में कल्याणकारी प्रभाव डालता है। यदि गौ पालन पर सरकार ध्यान दे तो समाज में पुनः सुख समृद्धि का वातावरण बनाया जा सकता है। वैज्ञानिक तौर पर भी सिद्ध किया जा चुका है कि गाय का मूत्र कीटाणुनाशक है जो शरीर विभिन्न बीमारियों को दूर करने में सहायक है। आधा कप गौ मूत्र खाना खाने के 1 घंटे पहले बवासीर, बादी और खूनी जोड़ो का दर्द हृदय धात, कैंसर आदि ठीक करने के लिये ले सकते हैं। गौ मूत्र में 18 सूक्ष्म तत्व हैं जो कि मिट्टी में होते हैं ये वैज्ञानिकों का परीक्षण कहता है। गौ मूत्र में कफ के सभी रोगों को पूरी तरह खत्म करने की क्षमता होती है। कुछ औषधियों के साथ मिलाकर लेने पर पित्त के रोग से भी मुक्ति प्राप्ति होती हैं।

लीवर का कैंसर आहार नली का कैंसर और पेट का कैंसर यदि कोई इस सब से ग्रसित है, तो गौ मूत्र हर तरह के कैंसर में फायदेमन्द होता हैं। गौ मूत्र पीने से त्वचा के सभी रोग ठीक होते हैं। गौ मूत्र से हड्डियों के सभी रोग ठीक होते हैं। पित्त, कफ के कुल 148 रोग हैं भारत में और इन 148 रोगों को खत्म करने की क्षमता केवल गौ मूत्र में ही हैं। गाय के गोबर में लक्ष्मी और मूत्र में गंगा का वास होता है। वैज्ञानिकों ने भी जब गौमूत्र का परीक्षण किया तो उन्होंने पाया कि गौमूत्र में 24 ऐसे गुण हैं, जो विभिन्न रोगों को ठीक करने की क्षमता रखते हैं।

इसमें नाइट्रोजन, ताम्र, फास्फेट, यूरिया, यूरिक एसिड, पोटाशियम क्लोराइड और सोडियम की विभिन्न मात्राएं पायी जाती हैं यह शरीर में उर्जा पैदा करती है। गौ मूत्र कड़क, कसैला, तीक्ष्ण और उष्मा होने के साथ-साथ विष नाशक और जीवाणु नाशक होता हैं।

गौ माता केवल पूजनीय ही नहीं है बहुत महत्वपूर्ण भी हैं। राजनेताओं ने इसे एक राजनैतिक मुद्रा बना लिया है। ये कोई राजनैतिक नहीं ये गौ हत्या का मामला है जो गौ हमारे लिये पूजनीय है। जो चीजें हमारे लिये हानिकारक हैं वो सभी बजारु दुध में शामिल होती हैं।



और बाजार मे इसी प्रकार का दूध मिलता है और मजमूरी मे हम ले भी रहे हैं। अब तो ये हाल है कि लोगो का ध्यान बन्द और प्लास्टिक थैली मे दूध चलन में है जिसमे कितने गुण होते कहना ही बेकार हैं और अब ये भी सुनने मे आ रहा है कि वैज्ञानिक या राष्ट्रीय डेयरी अनुसधान संस्थान के पशु का दूध निकालने की प्रक्रिया आक्सीटोसीन हार्मोन्स इंजेक्शन सस्ता और लगाने में आसान होता हैं। इसमे 20 प्रतिशत अधिक दूध प्राप्त होता है। पशु द्वारा परन्तु इसमे सेहत पर बुरा प्रभाव पड़ता है। लोग ना जाने कितने ही आरामदायक संसाधन का प्रयोग करते हैं अपने ऐशो आराम के लिये काफी खर्चा करते हैं। परन्तु वो कभी ये नहीं सोचते कि गौ सेवा कितनी महत्वपूर्ण है। वैसे तो काफी गौशालाए हुआ करती थी परन्तु आज इनकी संख्या बहुत कम हो गयी है। बल्कि नाम मात्र की ही रह गयी हैं, और जो रह गयी है उनकी अवस्था भी ठीक नहीं है। माना गाय दूध देना बन्द कर देती है तो भी वो हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

क्योंकि उसके दूध के अलावा उसका गोबर और गौ मूत्र बेहद काम के हैं। गो मूत्र मे 18 सूक्ष्म पोशक तत्व है जो कि मिट्टी में होते हैं। अभी तक आपने जाना की गौ मूत्र कितना महत्वपूर्ण होता है परन्तु उसके दूध से बनने वाले धी के भी अनेक फायदे हैं। देसी धी हृदय रोगियो के लिये बहुत फायदे मन्द है। वह मोटापा कम करता है। देशी धी बच्चों और गर्भवती महिलाओं को बहुत फायदा करता है। भारत में गाय को पूजा जाता है और इसलिये उसे गौ माता पुकारा जाता हैं। वो जानवर के रूप मे नहीं देखा जाता। माना जाता है कि गौ माता को अनेको देवता वास करते हैं। आईये आपको गौ माता के धी के फायदे बताये। यदि आपके बच्चे को कफ, जुकाम इत्यादि हैं तो पुराना देसी धी उसकी छाती पर मलने से उसको आराम मिलता है। गाय का धी नॉक मे डालने से बाल नहीं झरते। गाय के धी से वजन भी नहीं बढ़ता है और सन्तुलन बना रहता है इन्सान ना ज्यादा मोटा ना पतला। गाय के धी को नाक में डालने से पागलपन दूर होता है। हाथ पॉव में जलन होने पर घर मलने से आराम मिलता है। धी से शारीरिक व मानसिक ताकत मे भी बढ़ोतरी होती है। यदि किसी के कान के पर्दे मे कोई परेशानी होती है तो वो गाय का धी कान मे डाले तो औपरेशन से बच सकते हैं। देसी गाय के धी में कैंसर जेसी गम्भीर बीमारी से लड़ने की ताकत होती हैं। यदि कोई जल जाता है तो उसके फोड़े पर देसी धी लगाने से आराम मिलता है। यदि किसी प्रकार की कमजोरी महसूस होती है तो वो



एक चममच देसी घी दूध मे मिलाकर और मिश्री डालकर पीले तो कमजोरी को हार्ट अटैक की तकलीफ है और चिकना कुछ भी खाने को मना है तो गाय का घी खोए हृदय मजबूत होगा। सिर दर्द होने पर शरीर में गर्मी लगती है तो गाय के घी को पैरों के तलवों के नीचे लगाये तो सिर दर्द मे आराम आ जाता है। यहाँ तक की यदि किसी व्यक्ति को सॉप काट ले तो तुरन्त उसे 100 ग्राम घी पीलाये और ऊपर से जितना हो सके गुनगुना पानी पिलाये विष का असर खत्म हो जायेगा। क्योंकि माता को साक्षात् कृष्ण मानते हैं। सारे भारत में कही भी चले जाइए और सारे तीर्थ स्थानों के देवस्थान देख आइये ऐसा दिव्य स्थान ऐसा दिव्य मन्दिर, दिव्य तीर्थ स्थान देखना हो तो बस वह है गौ माता और इससे बढ़कर ना कोई तप है न कोई जप है।

गौ विश्वस्य मातरः देव जिसे विश्व की माता बताते हो उस गौ माता की तुलना किससे साथ और कैसी की जा सकती हैं। जिस तीर्थों में तीर्थराज प्रयाग है उसी प्रकार देवी-देवताओं में अग्रणी गौ माता को बताया गया है। गौ माता हमारी ऐसी मौ है जिनकी बराबरी न कोई देवी देवता कर सकता है और ना ही कोई तीर्थ स्थान। गाय, गोपाल, गीत, गायत्री तथा धर्मप्राण भारत के प्राण है। आधार है गौ माता के दर्शन और उसकी सेवा से जो पुण्य प्राप्त होता है वो कहीं- नहीं हो सकता है।

गौ माता को एक ग्रास खिला दीजिए तो वह सभी देवी देवताओं तक पहुँच पाता हैं। इसीलिए धर्मग्रन्थ बताते हैं कि समस्त देवी-देवताओं एक पितरो को एक साथ प्रसन्न करना तो गौ भक्ति, गौ सेवा से बढ़कर कोई अनुष्ठान नहीं। श्री कृष्ण भगवान ने अपना नाम गौ माता के नाम पर ही रख लिया या गोपाल सारा दिन नंगे पौव जंगल-जंगल चराते फिरते थे। मान्यता है कि गाय माता अपने बच्चे को दूध पिलाती दिख जाए तो उनका दर्शन बहुत शुभ माना जाता है। जहाँ गाय बैठती है वहाँ की भूमि पवित्र होती हैं। गाय के चरणों की धूल भी पवित्र होती है। गौ माता का वैज्ञानिक महत्व भी हैं। गाय माता के समीप जाने से ही संक्रामक रोग कफ सर्दी खोंसी जुकाम का नाश होता है। गाय के सींग भी एंटीना उपकरण के रूप मे काम करते है इन्हें सूर्य से उर्जा प्राप्त होती है। गाय माता के सींग उसकी रक्षा कवच है। उसके ये सींग गाय के सींग उसकी मृत्यु के 45 साल बाद एक भी सुरक्षित बने रहते हैं। आज भारत मे गौ हत्या का गौ मांस का चलन इतना बढ़ गया है कही उसको काटते हुई, कही उसके साथ बुरा व्यवहार



करते हुए खून से भरी गौ माता के विडियो या तस्वीरे नेट पर डाल दी जाती है क्यों सरकार इस पर ध्यान नहीं देती गाय एक मात्र प्राणी है धरती पर जो ऑक्सीजन ग्रहण करता है। साथ ही ऑक्सीजन छोड़ता है। गौ माता के गोबर के जलने से मक्खी मच्छर आदि कीटाणु नहीं होते।

आपको सुनकर हैरानी होगी कि गौ माता को राष्ट्र माता का दर्जा दिलाने के लिये राजकोट से 6 व्यक्तियों ने काफी प्रयास कि सरकार के सामने अपनी मांगे रखी परन्तु सरकार ने उसे अन्यथा लिया और ऐसा होने के कारण उन 6 व्यक्तियों ने जहर खाकर आत्म हत्या कर ली। गौशालाओं कि स्थिति बेहद गम्भीर बनी हुई हैं। राजस्थान हो चाहे प्रतापगढ़ चाहे कही भी हर जगह गौशालाओं की स्थिति खराब हैं। गाय तड़प-तड़प कर मरने को मजबूर है समझ नहीं आता कोई भी सरकार जब सत्ता में आती है तो वो वैसी बन जाती है जैसी पहले वाली सरकार थी।

इसी हेतु राजनीति और बहस होती थी और उसकी जो हालत है जो गौ माता बदहाल हैं। उस पर राजनीति होती है मतलब ये कि गौ माता की परवाह किसी में नहीं बस सत्ता में उतरने के लिये एक मुद्रा बना लेते हैं, आज भी सड़क पर चलिये तो जगह-जगह 7 से 8 गाय भैंस आपको घूमते मिलेंगी। चिड़वा की श्री कृष्ण गौशाला का निरिक्षण करने पहुंचे तो वहाँ भी स्थिति अच्छी नहीं थी। इसी तरह छत्तीसगढ़ के जाजगीर जिले के जैजेपुर विकास खण्ड के ग्राम पंचायत नदेली मे संचालित जय मौं सिदारीन दाई गौशाला की स्थिति भी बद से बदतर है। जिन 6 व्यक्तियों ने गाय को हमारी राष्ट्रमाता बनाने की मौंग कि थी इसी को लेकर रैली कर कलेक्टर को विज्ञापन भी दिया था।

इस वारदात के बाद 18, 2017 को गाय को राष्ट्रमाता का सम्मान दिया व भारत सरकार मे गौ मंत्रालय अलग से स्थापित करने की मौंग की। 80 करोड़ हिन्दुओं की धार्मिक आस्था का प्रजिक है परन्तु इस आस्था पर अब सवाल उठने लगे है लेकिन सरकार गाय को पशु श्रेणी मे समझती है। इस दौरान उन्होंने गौ चरण भूमि गायो के लिये उपलब्ध कराने गौ हत्या को मनुष्य हत्या के समान दंड देने का प्रावधान करने की मौंग की। जो गाय दूध देने लायक नहीं रहती उसे सड़को पर छोड़ दिया जाता है क्यों अरे अगर वो दूध नहीं दे पा रही होती है तो भी वो बहुत काम की है। गौ मूत्र और गाय का गोबर भी बहुत महत्वपूर्ण होता है। मक्खी मच्छर और अन्य कीड़े मकोड़े जो गंदगी छोड़ते हैं। वो गोबर लिपने से नहीं रहते हैं। गाय के पंच भवन



हमारे शरीर के लिये और वातावरण के लिये और धार्मिक दृष्टि से भी अत्यंत उत्तम होता है।

जहों भी गाय के गोबर से पुताई की गई है वहों किसी भी प्रकार की पूजा करने से अधिक पुण्य व फल मिलता है। वैज्ञानिक दृष्टि से भी इसका महत्व बहुत अधिक होता है। इसलिये पढ़े लिखे लोग भी इसे उत्तम मानते हैं और तो और अमेरिका जर्मनी तथा इटली में भी वैज्ञानिक भी गोबर से लीपे गये स्थान का महत्व समझने लगे हैं वे इसे हाइजीनिक मानते हैं। जिस घर या मंदिर में गौ माता का निवास होता है उस जगह को साक्षात् देव भूमि कहा गया है वेदों के अनुसार गौ रुद्रों की माता और वसुओं की पुत्री है इसलिये निर्मल भाव से पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ किसी भी कार्य की सिद्धि के लिये रोज नित्य गौ माता की सेवा करनी चाहिये।

मंत्र

सुरुप बहु रुषाश्र विश्वरुपाश्र मातरं।
गावो भामुपतिष्ठाभिति नित्य प्रकीर्तयेत्॥

हम सभी यदि हिन्दु हैं और हिन्दुत्व की भावना रगों में खुन की तरह बहती है तो गौ हत्या को रोकिये। कैसे पुत्र है आप अपनी मॉं की दुर्दशा कैसे देख पाते हैं। अगर आपको जन्म देने वाली मॉं दुध पिलाकर पालती है तो गौ माता का भी दुध पिया तो होगा जरुर तो आप उसके कर्जदार।?

कृपया करके गौ हत्या रोकिये उस पर राजनीति ना करें। उसे आपकी राजनीति की नहीं सेवा और प्यार की जरुरत हैं और आप सबको उसकी जरुरत हैं।

